

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ
وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً (سورة النساء: 1)

पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com



يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا
زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً (سورة النساء 1)

पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
najeebqasmi@gmail.com
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब	10
5	वालिदैन की फरमांबरदारी	11
6	मियां बीवी की जिम्मेदारियां	17
7	निकाह के दो अहम मक़सद	19
8	शौहर की जिम्मेदारियां (बीवी हक्क शौहर पर	20
9	बीवी की जिम्मेदारियां यानी शौहर के हक्क बीवी पर	24
10	बेटी अल्लाह की रहमत	36
11	अक़ीका के मसाइल	42
12	क्या दिन अक़ीका करना है?	44
13		49
14	औरतों के खुसूसी मसाइल	52
15	हैज़ व निफ़ास के मसाइल	52
16	इस्तिहाज़ा के मसाइल	55
17	मानेअ हमल के ज़राये का इस्तेमाल	55
18	इसकाते हमल (Abortion)	56
19	दूध पिलाने से हरमत का मसअला	56
20	महरम का बयान	58
21	इल्मे मीरास और उसके मसाइल	62

22	तीन तलाक़ का मसअला	74
23	इदत के मसाइल	102
24	निकाह एक नेमत, तलाक एक ज़रूरत और इदत हुक़मे इलाही	108
25	तलाक का इख़्तियार को	110
26	खुला	111
27	तलाक की	112
28	एक साथ तीन तलाक	113
29	इदत, हुक़मे इलाही	116
30	इदत शौहर की मौत की वजह से	116
31	इदत तलाक या खुला की वजह से	117
32	इदत की	118
33	लेखक का परिचय	121

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ.

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ़ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ़ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ॥ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तकाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुम्सी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मकबूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तकरीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

रोज़ मरी इस्तेमाल में आने वाले खान्दानी मसायल से मुतअल्लिक मज़ामीन को (वालिदैन की फरमाबरदारी, मियां बीवी की जिम्मेदारियां, बेटी अल्लाह की रहमत, अक्रीकेह के मसायल, बच्चे की पैदाइश के वक़्त कान में अज़ान और इक़ामत, औरतों के खुसूसी मसाइल, महरम का ब्यान, विरासत और उसके मसायल, निकाह एक नेमत, तलाक़ एक ज़रूरत और इद्दत हूकूम इलाही और इस्लाम और ज़ब्ते विलादत) किताबी शकल (पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में) में जमा कर दिया गया है ताकि इस्तिफ़ादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारूल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रात मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Muslimah (MC) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تہم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے، دینی کام کرنے والوں کے لئے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توفیق بخشے۔

ابورحمان عثمان فرما

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۱۴۳۷ھ

مولانا محمد اسرار الحق قاسمی
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



1E, South Avenue, New Delhi, 110011
Ph: 811-23785046 Telefax: 011-23786314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائراٹ

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے جب آئن انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و ایمان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ سادہ مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلا رہے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم و دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

خط

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی

ایم۔ بی۔ لوک-بھیا (انڈیا)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی کارگزاری، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

پرو. اخضرل واسے

آیوکت

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دوچیلوں میں سما گئیں ہیں۔ اس نے ”گماگر میں ساگر“ اور ”گھوڑے میں دریا“ کے تجزیاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جا رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل و ابلاغ کو وہ حصہ جہت رنج اور فرقی کھڑی عطا کی ہے کہ فراق و فاصل کے تمام تصورات بے معنی ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو سچ کرنے کا چیلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جانتا چاہتے ہیں۔ اس چیلنج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دبا کر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعی انقلاب کے جتنے بھی وسائل و ذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موقر اور معتبر عالم حضرت دین مولا نا محمد نجیب قاسمی نے جواز ہر بند اور اہل علم و دینہ کے قابل فخر رہائے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدہ عائشہ ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو کوئی سمجھا اور دنیا کی پہلی اسلامی موبائل ایپ ”دین اسلام“ اور ”چمبرز“ اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک وفد پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالے سے دوسرے مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے واقعی قفا محترم مولا نا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرونک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقع ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ انداز تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولا نا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہر یہ تحریک و تشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی و علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے استقاں اور بھی ہیں

استمیر

(پروفیسر اختر الواسع)

سابق ڈائریکٹر، ڈاکٹر حسین انیس ٹیٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر، شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ اسلامیہ دہلی
سابق وائس چیرمین، اردو اکادمی دہلی

14/11, Jam Nagar House, Shahjahan Road, New Delhi-110011

14/11, Jam Nagar House, Shahjahan Road, New Delhi-110011

Tel: (O) 011-23072651-52 Email: wasey27@gmail.com Website: www.nclm.nic.in

वालिदैन की फरमांबरदारी

कुरान व हदीस में वालिदैन के साथ हुक्म सुलूक करने की खुसूसी ताकीद की गई है। अल्लाह तआला ने बहुत सी जगहों पर अपनी तौहीद व इबादत का हुकुम देने के साथ वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करने का हुकुम दिया है, जिससे वालिदैन की इताअत, उनकी खिदमत और उनके अदब व एहतेराम की अहमियत वाज़ेह हो जाती है। अहादीस में भी वालिदैन की फरमांबरदारी की खास अहमियत व ताकीद और उसकी फज़ीलत बयान की गई है। अल्लाह तआला हम सबको वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करने वाला बनाए, उनकी फरमांबरदारी करने वाला बनाए उनके हुक्म की अदाएगी करने वाला बनाए, आमीन।

आयाते कुरानिया

“और तेरा परवरदिगार साफ साफ हुकुम दे चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करना और मा बाप के साथ एहसान करना। अगर तेरी मौजूदगी में उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाए तो उनके आगे उफ तक न कहना, न उन्हें डाट डपट करना, बल्कि उनके साथ अदब व एहतेराम से बातचीत करना और आजिज़ी व मोहब्बत के साथ उनके सामने तवाज़ो का बाज़ू पस्त रखना और दुआ करते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार! उनपर वैसा ही रहम कर जैसा कि उन्होंने मेरे बचपन में मेरी परवरिश की है। (सूरह बनी इसराइल 23, 24)

जहां अल्लाह तआला ने अपनी इबादत करने का हुकुम दिया है वहीं वालिदैन् के साथ इहसान करने का भी हुकुम दिया है। एक दूसरी जगह अपने शुक्र बजा लाने के साथ वालिदैन् के वास्ते भी शुक्र का हुकुम दिया। अल्लाहु अकबर ज़रा गौर करें कि मां बाप का मक़ाम व मरतबा क्या है, तौहीद व इबादत के बाद इताअत व खिदमते वालिदैन् ज़रूरी करार दिया गया, क्योंकि जहां इंसानी वजूद का हकीकी सबब अल्लाह है तो वहीं ज़ाहिरी सबब वालिदैन्। इससे यह भी मालूम हुआ कि शिर्क के बाद सबसे बड़ा मुष्हाह वालिदैन् की नाफरमानी है जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना और वालिदैन् की नाफरमानी करना बहुत बड़ा गुनाह है। (बुखारी)

मां बाप की नाफरमानी तो बहुत दूर नाराज़गी व नापसंदीदगी के इज़हार और झिड़कने से भी रोका गया है और अदब के साथ नर्म गुफ्तगू का हुकुम दिया गया है, साथ ही साथ बाज़ुए ज़िल्लत पस्त करते हुए तवाज़ो व इंकिसारी और शफ़क़त के साथ बरताव का हुकुम होता है और पूरी ज़िन्दगी वालिदैन् के लिए दुआ करने का हुकुम उनकी अहमियत को दोबारा करता है। **“और तुम सब अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मा बाप के साथ नेक बरताव करो।”** (सूरह नीसा 36)

“हमने हर इसान को अपने बाप के साथ अच्छा सुलूक करने की नसीहत की है।” (सूरह अंकबूत 8)

अहादीसे शरीफा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अल्लाह को कौन सा अमल ज़्यादा महबूब है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने कहा उसके बाद कौन सा अमल अल्लाह को ज़्यादा पसंद है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वालिदैन् की फरमांबरदारी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं मैंने कहा कि उसके बाद कौन सा अमल अल्लाह को ज़्यादा महबूब है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहने लगा कि मैं अल्लाह तआला से अजर की उम्मीद के साथ आप के हाथ पर हिजरत और जिहाद करने के लिए बैअत करना चाहता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हारे मां बाप में से कोई ज़िन्दा है? उस शख्स ने कहा (अलहमुद लिल्लाह) दोनों ज़िन्दा हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस शख्स से पूछा क्या तू वाकई अल्लाह तआला से अजरे अज़ीम का तालिब है? उसने कहा हां। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाया अपने वालिदैन् के पास जा और उनकी खिदमत कर। (मुस्लिम)

एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया मेरे पुत्रने सुलूक का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक कौन है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारी मां। उस शख्स ने पूछा फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारी मां। उसने पूछा फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारी मां। उसने पूछा फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारा बाप। (बुखारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया बाप जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतरीन दरवाज़ा है, ज़ुआंचे तुम्हें इख्तियार है चाहे (उसकी नाफरमानी करके और दिल दुखा के) उस दरवाज़े को बरबाद कर दो या (उसकी फरमांवरदारी और उसको राज़ी रख कर) उस दरवाज़े ही हिफाज़त करो। (तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला की रज़ामंदी वालिद की रज़ामंदी में है और अल्लाह तआला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है। (तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स को यह पसंद हो कि उसकी उम्र दराज़ की जाए और उसके रिज़क को बढ़ा दिया जाए उसको चाहिए कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करे और रिशतेदारों के साथ सिलारहमी करे। (मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक किया उसके लिए खुशखबरी है कि अल्लाह तआला उसकी उम्र में इज़ाफा फरमाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह शख्स ज़लील व खवार हो, ज़लील व खवार हो, ज़लील व खवार हो। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! कौन ज़लील व खवार हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया वह शख्स जो अपने मां बाप में से किसी एक या दोनों को बुढ़ापे की हालत में पाए फिर (उनकी खिदमत के ज़रिये) जन्नत में दाखिल न हो। (मुस्लिम)

कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफाक है कि वालिदैन की नाफरमानी बहुत बड़ा गुनाह है। वालिदैन की नाराज़गी अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब बनती है, लिहाज़ा हमें वालिदैन की इताअत और फरमांबरदारी में कोताही नहीं करनी चाहिए, खास कर जब वालिदैन या दोनों में से कोई बुढ़ापे को पहुंच जाए तो उन्हें डांट डपट करना, हत्ताकि उनको उफ तक नहीं कहा चाहिए, अदब व एहतेराम और मोहब्बत व खुलूस के साथ उनकी खिदमत करनी चाहिए। मुमकिन है कि बुढ़ापे की वजह से उनकी कुछ बातें या आमाल आपको पसंद न आएँ, आप उसपर सब्र करें, अल्लाह तआला इस सब्र करने पर भी अजरे अज़ीम अता फरमाएगा इंशाअल्लाह।

दौराने हयात हुक्क

उनका अदब व एहतेराम करना, उनसे मोहब्बत करना, उनकी फरमांबरदारी करना उनकी खिदमत करना, उनको जहां तक हो सके आराम पहुंचाना, उनकी ज़रूरीयात पूरी करना, थोड़े थोड़े वक़्त में उनसे मुलाकात करना।

वफात के बाद हुक्क

उनके लिए अल्लाह तआला से माफी और रहमत की दुआएं करना। उनकी जानिब से ऐसे आमाल करना जिनका सवाब उन तक पहुंचे। उनके रिशतेदार, दोस्त व मुतअल्लिकीन की इज़्जत करना। उनके रिशतेदार, दोस्त और मुतअल्लिकीन की जहां तक हो सके मदद करना। उनकी अमानत व कर्ज़ अदा करना। उनकी जाएज़ वसीयत पर अमल करना। कभी कभी उनकी कब्र पर जाना।

नोट - वालिदैन की भी जिम्मेदारी है कि वह औलाद के दरमियान बराबरी कायम रखें और उनके हुक्क की अदाएगी करें। आम तौर पर गैर शादी शुदा औलाद से मोहब्बत कुछ ज़्यादा हो जाती है जिस पर पकड़ नहीं है, लेकिन बड़ी औलाद के मुकाबले में छोटी औलाद को मामलात में तरजीह देना मुआसिब नहीं है जिसकी वजह से घरेलू मसाइल पैदा होते हैं, लिहाज़ा वालिदैन को जहां तक हो सके औलाद के दरमियान बराबरी का मामला करना चाहिए। अगर औलाद घर वगैरह के खर्च के लिए बाप को रक़म देती है तो उसका सही इस्तेमाल होना चाहिए। अल्लाह तआला हमें अपने वालिदैन की फरमांबरदारी करने वाला बनाए और हमारी औलाद को भी इन हुक्क की अदाएगी करने वाला बनाए, आमीन।

मियां बीवी की जिम्मेदारियां

हक के मानी

हक के मानी साबित होने यानी वाजिब होने के हैं, उसकी ज़ाहू हूकूक आती है जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है “उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है, सो यह लोग ईमान नह लाएंगे।” (सूरह यासीन 7) हक बातिल के मुकाबला में भी इस्तेमाल होता है, जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान “और इलाम कर दो कि हक और बातिल मिट गया यकीनन बातिल को मिटना ही था।” (सूरह इसरा 81)

हूकूक की अदाएगी

शरीअते इस्लामिया ने हर उस शख्स को इस बात पर मुतवज्जह किया है कि वह अपने फराइज अदा करे, अपनी जिम्मेदारियों को सही तरीका पर अंजाम दे और लोगों के हूकूक की पूरी अदाएगी करे। शरीअते इस्लामिया ने हर उस शख्स को मुकल्लफ बनाया है कि वह अल्लाह के साथ बन्दों के हूकूक की पूरी तौर पर अदाएगी करे हत्ताकि बाज़ वजुह से हूकूकुल इबाद को ज़्यादा एहतेमाम से अदा करने की तालीम दी गई।

आज हम दूसरों के हूकूक तो अदा नहीं करते अलबत्ता अपने हूकूक का झंडा उठाए रहते हैं। दूसरों के हूकूक की अदाएगी की कोई फिक्र नहीं करते हैं, अपने हूकूक को हासिल करने के लिए मुतालबात किए जा रहे हैं, तहरीकें चलाई जा रही हैं, ज़ाहिर किए जा रहे हैं, हड़ताल की जा रही है, हूकूक के नाम से अंजूमनें और तंजिमें बनाई जा रही हैं। लेकिन दुनिया में ऐसी अंजूमनें या तहरीकें या कौशिशें

मौजूद नहीं है कि जिनमें यह तालीम दी जाए कि अपने फराइज, अपनी जिम्मेदारियां और दूसरों के हुक्क जो हमारे जिम्मे हैं वह हम कैसे अदा करें? शरीअते इस्लामिया का असल मुत्तालबा भी यही है कि हममें से हर एक अपनी जिम्मेदारियों यानी दूसरों के हुक्क अदा करने की ज़्यादा कोशिश करे।

मियां बीवी के आपसी तअल्लुकात में भी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही तरीका इख्तियार किया है कि दोनों को उनके फराइज यानी जिम्मेदारियां बता दें। शौहर को बता दिया कि तुम्हारे फराइज और जिम्मेदारियां क्या हैं और बीवी को बता दिया कि तुम्हारी जिम्मेदारियां क्या हैं, हर एक अपने फराइज और जिम्मेदारियों को अदा करने की कोशिश करे। ज़िन्दगी की गाड़ी इसी तरह चलती है कि दोनों अपने फराइज और अपनी जिम्मेदारियां अदा करते रहें। दूसरों के हुक्क अदा करने की फिक्र अपने हुक्क हासिल करने की फिक्र से ज़्यादा हो। अगर यह जज़्बा पैदा हो जाए तो फिर ज़िन्दगी बहुत उमदा खुशगवार हो जाती है।

मियां बीवी

दो अजनबी मर्द व औरत के दरमियान शौहर और बीवी का रिश्ता उसी वक़्त कायम हो सकता है जबकि दोनों के दरमियान शरई निकाह अमल में आए। निकाहे शरई के बाद दो अजनबी मर्द व औरत रफीके हयात बन जाते हैं, एक दूसरे के रंज व खुशी, तकलिफ व राहत और सेहत व बीमारी गरज़ ये कि ज़िन्दगी के हर गोशा में शरीक हो जाते हैं। अकदे निकाह को कुरान करीम में मिसाके गलीज़ का नाम दिया गया है यानी निहायत बज़बूत रिश्ता। निकाह की

वजह से बेशुमार हराम काम एक दूसरे के लिए हलाल हो जाते हैं यहां तक कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में एक दूसरे को लिबास से ताबीर किया है यानी शौहर अपनी बीवी के लिए और बीवी अपने शौहर के लिए लिबास की तरह है। शरई निकाह के बाद जब आदमी शौहर और औरत बीवी बन जाती है तो एक दूसरे का जिस्मानी और रूहानी तौर पर लुत्फ अंदोज हो जाना जाएज़ हो जाता है और एक दूसरे के जिम्मे जिस्मानी और रूहानी हुक्क वाजिब हो जाते हैं। शरई अहकाम की पाबन्दी करते हुए शौहर और बीवी का जिस्मानी तौर पर लुत्फ अंदोज होना नीज़ एक दूसरे के हुक्क की अदाएगी करना यह सब शरीअते इस्लामिया का हिस्सा है और उन पर भी सवाब मिलेगा, इंशाअल्लाह।

निकाह के दो अहम मक़सद

अल्लाह तआला ने कुरान करीम में निकाह के मकासिद में से दो अहम मक़सद नीचे की आयात में लिखे हैं।

“और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जिंस से बीवियां पैदा कीं ताकि तुम उनसे आराम पाओ और उसने तुम्हारे दरमियान मोहब्बत और हमदर्दी कायम करदी, यक़ीनन ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए उसमें बहुत सी निशानियां हैं।” (सूरह रूम 21) गरज़ ये कि इस आयत में निकाह के दो अहम मकासिद बयान किए गए।

1) मियां बीवी को एक दूसरे से कल्बी व जिस्मानी सुकून हासिल होता है।

2) मियां बीवी के दरमियान एक ऐसी मोहब्बत, उलफत, तअल्लुक, रिश्ता और हमदर्दी पैदा हो जाती है जो दुनिया में किसी भी दो शख्सियतों के दरमियान नहीं होती।

मियां बीवी की जिम्मेदारियों की तीन किसमें

इंसान सिर्फ इंफरादी ज़िन्दगी नहीं रखता बल्कि वह फतरतन मुआशरती मिजाज रखने वाली मख्लूक है, उसका वजूद खानदान के एक रूकन और मुआशरे के एक फर्द की हैसियत से ही पाया जाता है। मुआशरा और खानदान की तशकील में मुक़ियादी एकाई मियां बीवी हैं जिनके एक दूसरे पर कुछ हुक्क हैं।

- 1) शौहर की जिम्मेदारियां यानी बीवी के हुक्क शौहर पर।
- 2) बीवी की जिम्मेदारियां यानी शौहर के हुक्क पर।
- 3) दोनों की मुशतरका जिम्मेदारियां यानी मुशतरका हुक्क।

शौहर की जिम्मेदारियां यानी बीवी के हुक्क शौहर पर

अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “औरतों का हक है जैसा कि (मर्द का) औरतों पर हक है, मारुफ तरीका पर।” (सूरह बकरह 228) इस आयत में मियां बीवी के तअल्लूक का ऐसा जामि दस्तुर पेश किया गया है जिससे बेहतर कोई दस्तुर नहीं हो सकता और अगर इस जामि हिदायत की रौशनी में अज़वाजी ज़िन्दगी गुजारी जाए तो इस रिश्ता में कभी भी तल्खी और कड़वाहट पैदा नह होगी, इंशाअल्लाह। वाकई यह कुरान करीम का इजाज है कि अल्फाज़ के इखितसार के बावजूद मानी का समुन्द्र में समो दिया गया है। यह आयत बता रही है कि बीवी को महज नौकरानी और खादमा मत समझना बल्कि यह याद रखना कि उसके भी कुछ

हुक्क हैं जिनकी पासदारी शरीयत में ज़रूरी है। इन हुक्क में जहां नान व नपका और रिहाईश का इंतज़ाम शामिल है वहीं उसकी दिल दारी और राहत रिसानी का ख्याल रखना भी ज़रूरी है। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुममें सबसे अच्छा आदमी वह है जो अपने घर वालों (बीवी बच्चों) की नज़र में अच्छा हो। और ज़ाहिर है कि उनकी नज़र में अच्छा वही होगा जो उनके हुक्क की अदाएगी करने वाला हो। दूसरी तरफ इस आयत में बीवी को भी आगाह किया कि उसपर भी हुक्क की अदाएगी लाज़िम है। कोई बीवी उस वक़्त तक पसंदीदा नहीं हो सकती जब तक कि वह अपने शौहर की ताबिदार और खिदमत गुज़ार हों और उनसे बहुत ज़्यादा मोहब्बत करने वाली हों और ऐसी औरतों की मुजम्मत की गई है जो शौहरों की नाफरमानी करने वाली हों।

शौहर की चद अहम जिम्मेदारियां हसबे जैल हैं

1) मुकम्मल मुहर की अदाएगी- अल्लाह तआला का इरशाद है “औरतों को उनका महर राजी व खुशी से अदा कर दो। निकाह के वक़्त महर की तार्इन और शबे जुफाफ से पहले उसकी अदाएगी होनी चाहिए, अगरचे तरफैन के इत्तेफाक से महर की अदाएगी को बाद में भी अदा कर सकते हैं। महर सिर्फ औरत का हक़ है, लिहाज़ा हूँ या उसके वालिदैन या भाई बहन के लिए महर की रकम में सेकु छ भी लेना जाएज़ नहीं है।

(वज़ाहत) शरीअत ने कोई भी खर्च औरतों पर नहीं रखा है, श्दी से पहले उसके तमाम खर्च वालिद के जिम्मा हैं और शादी के बाद औरत के खाने, पीने, रहने, सोने और लिबास के तमाम खर्च शौहर

के जिम्मा हैं, लिहाज़ा महर की रकम औरत खालिस मिलिकियत है उसको जहां चाहे और जैसे चाहे इस्तमाल करे, शौहर या वालिद मशविरा दे सकते हैं मगर उस रकम में खर्च करने का पूरा इख्तियार सिर्फ औरत को है, इसी तरह अगर औरत को कोई चीज विरासत में मिली है तो वह औरत की मिलिकियत होगी, वालिद या शौहर को वह रकम या जाइदाद लेने का कोई हक नहीं है।

2) बीवी के तमाम खर्चे- अल्लाह तआला का इरशाद है “बच्चों के बाप (शौहर) पर औरतों (बीवी) का खाना और कपड़ा लाज़िम है दस्तुर के मुताबिक।” (सूरह बकरह 233)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया औरतों के सिलसिला में अल्लाह तआला से डरो क्योंकि अल्लाह तआला की अमान में तुमने उनको लिया है। अल्लाह तआला के हुकुम की वजह से उनकी शर्मगाहों को तुम्हारे लिए हलाल किया गया है। दस्तुर के मुताबिक उनके पूरे खाने पीने का खर्च और कपड़ों का खर्चा तुम्हारे जिम्मा है। (मुस्लिम)

3) बीवी के लिए रिहाईश का इंतिज़ाम- अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है “तुम अपनी ताकत के मुताबिक जहां तुम रहते हो वहां उन औरतों को रखो।” (सूरह तलाक 6) इस आयत में मुसल्लका औरतों का हुकुम बयान किया जा रहा है कि इदत के दौरान उनकी रिहाईश का इंतिज़ाम भी शौहर के जिम्मा है। जब शरीअत नेक मुतल्लका औरतों की रिहाईश का इंतिज़ाम शौहर के जिम्मा रखा है तो हसबे इस्तिताअत बीवी की मुनासिब रिहाईश की ज़िम्मेदारी बदर्जा औला शौहर के जिम्मा होगी।

4) बीवी के साथ हुसने मुआशिरत- शौहर को चाहिए कि वह बीवी के साथ अच्छा सुलूक करे। अल्लाह तआला फरमान “उनके साथ अच्छे तरीके से पेश आओ यानी औरतों के साथ गूफ्तगु और मामलात में हुसने इखलाक के साथ मामला रखोगो तुम उन्हें नापसंद करो लेकिन बहुत मुमकिन है कि तुम किसी चीज को बुरा जानो और अल्लाह तआला उसमें बहुत ही भलाई करदे।” (सूरह निसा 19)

शौहर की चौथी ज़िम्मेदारी “बीवी के साथ हुसने मुआशिरत” बहुत ज्यादा अहमियत रखती है, उसकी अदाएगी के मुख्तलिफ तरीके हसबे जैल हैं।

1) हसबे इस्तिताअत बीवी और बच्चों पर खर्च करने में फराख दिली से काम लिना चाहिए जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई शख्स अल्लाह तआला से अजर की उम्मीद के साथ अपने घर वालों पर खर्च करता है तो वह सदाका होगा यानी अल्लाह तआला उसपर अजर अता फरमाएगा।

2) बीवी से मशविरा- इसमें कोई शक नहीं है कि घर के इंतज़ाम को चलाने की ज़िम्मेदारी मर्द के जिम्मा रखी गई है जैसा कि कुक्कान करीम में मर्द के कौवाम का लफ्ज़ इस्तेमाल किया गया है यानी मर्द औरतों पर निगहबान और मुंतजिम हैं। लेकिन हुसने मुआशिरत के तौर पर औरत से भी घर के निज़ाम को चलाने के लिए मशविरा लेना चाहिए जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया यानी बेटियों के रिशतों के लिए अपनी बीवी से मशविरा किया करो।

3) बीवी की बाज़ कमजोरियों से चशम पोशी करें, खास तौर पर जबकि दूसरी खुबियां व महासिन उनके अंदर मौजूद हों, याद रखें कि

अल्लाह तआला ने आम तौर पर औरत में कुछ नह कुछ खुबियां ज़रूरी रखी हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर औरत की कोई बात या अमल नापसंद आए तो मर्द औरत पर गुस्सा नह करे क्योंकि उसके अंदर दूसरी खुबियां मौजूद हैं जो तुम्हें अच्छी लगती हैं। (मुस्लिम)

4) मर्द बीवी के सामने अपनी जात को काबिले तवज्जह यानीस्मार्ट बना कर रखे क्योंकि तुम जिस तरह अपनी बीवी को खुबसूरत देखना चाहते हो वह भी तुम्हें अच्छा देखना चाहती है। सहाबी रसूल व मुफस्सीरे कुरान हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं अपनी बीवी के लिए वैसा ही सजता हूं जैसा वह मेरे लिए जेब व जिनत इख्तियार करती है। (तफसीरे कुर्तुबी)

5) घर के काम व काज में औरत की मदद की जाए, खासकर जब वह बीमार हो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर के तमाम काम कर लिया करते थे, झाड़ु भी खुद लगा लिया करते थे, कपड़ों में पैवंद भी खुद लगाया करते थे और अपने जुतों की मरम्मत भी खुद कर लिया करते थे। (बुखारी)

बीवी की जिम्मेदारियां यानी शौहर के हुक्म बीवी पर

1) शौहर की इताअत- अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “मर्द औरतों पर हाकिम हैं इस वजह से कि अल्लाह तआला ने एक दूसरे पर फज़ीलत दी है और इस वजह से कि मर्द ने अपने माल खर्च किए हैं।” (सूह निसा 34) जो औरतें नेक हैं वह अपने शौहरों का कहना मानती हैं और अल्लाह के हुक्म के मुवाफिक नेक

औरतें शौहर की अदमे मौजूदगी में अपने नफस और शौहर के माल की हिफाज़त करती हैं यानी अपने नफस और शौहर के माल में किसी किसम की ख्यानत नहीं करती हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने मर्द को औरत पर फौकियत व फज़ीलत देने की दो वजह ज़िक्र फरमाई हैं।

1) मर्द व औरत व सारी कायनात को पैदा करने वाले अल्लाह तआला ने मर्द को औरत पर फज़ीलत दी है।

2) मर्द अपने और बीवी व बच्चों के तमाम खर्चे बर्दाशत करता है।

इसी तरह दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया “मर्द को औरतों पर फज़ीलत हासिल है।: (सूरह बक्ररह 228)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर औरत ने (खास तौर पर) पांच नमाज़ों की पाबंदी की, रमज़ान के महीने के रोजे एहतेमाम से रखे, अपनी शरमगाह की हिफाज़त की और अपने शौहर की इताअत की तो गोया वह जन्नत में दाखिल होगी। (मुसनद अहमद)

एक औरत ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मुझे औरतों की एक जमाअत ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक सवाल करने के लिए भेजा है और वह यह है कि अल्लाह तआला ने जिहाद का हुकुम मर्द को दिया है ज़ुआंचे अगर उनको जिहाद में तकलिफ पहुंचती है तो उसपर उनको अजर दिया जाता है और अगर वह शहीद हो जाते हैं तो अल्लाह तआला के खुसूसी बन्दों में ज़ुआर हो जाते हैं मरने के बावजूद वह जिन्दा रहते हैं और अल्लाह तआला की तरफ से खुसूसी रिज़क उनको दिया जाता है। (जैसा कि सूरह आले इमरान 169 में लिखा है) हम औरतें उनकी

खिदमत करती हैं, हमारे लिए क्या अजर है? तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिन औरतों की तरफ से तुम भेजी गई हो उनको बता दो कि शौहर की इताअत और उसके हक़ का एतेराफ तुम्हारे लिए अल्लाह के रास्ते में जिहाद के बराबर है लेकिन तुममें से कम ही औरतें इस ज़िम्मेदारी को बखुबी अंजाम देती हैं। (बज़्ज़ार, तबरानी)

(वज़ाहत) इन दिनों मर्द व औरत के दरमियान मुम्मावात और आज़ादी-ए-निसवां का बड़ा शऊर है और बाज़ हमारे भाई भी इस प्रोपेगण्डे में शरीक हो जाते हैं। हकीकत यह है कि मर्द व औरत ज़िन्दगी के गाड़ी के दो पहिये हैं, ज़िन्दगी का सफर दोनों के एक साथ तैय करना है, अब ज़िन्दगी के सफर को तैय करने में इतिज़ाम की खातिर यह लाजमी बात है कि दोनों में से कोई एक सफर क ज़िम्मेदार हो ताकि ज़िन्दगी का निज़ाम सही चल सके। लिहाज़ा तीन रास्ते हैं। (1) दोनों को ही अमीर बनाया जाए। (2) औस को इस ज़िन्दगी के सफर का अमीर बनाया जाए। (3) मर्द को इस ज़िन्दगी के सफर का अमीर बनाया जाए। पहली शकल में इख्तेलाफ की सूरत में मसअला हल होने के बजाए पेचिदा होता जाएगा। दूसरी शकल भी मुमकिन नहीं है क्योंकि मर्द व औरत को पैदा करने वाले ने सिन्फे नाजूक को ऐसी औसाफ से मुत्तसिफ पैदा किया है कि वह मर्द पर हाकिम बन कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकती है। लिहाज़ा अब एक ही सूरत बची और वह यह है कि मर्द इस ज़िन्दगी के सफर का अमीर बन कर रहे। मर्द में आदतन व तबअन औरत की बनिस्बत फिक्र व तदब्बुर और बर्दाशत व तुहम्मुल की कुव्वत ज़्यादा होती है, नीज़ इंसानी खिलकत, फितरत, कुव्वत और सलाहियत के लिहाज से

और अकल के ज़रिया इंसान गौर व खौज करे तो यही नज़र आएगा कि अल्लाह तआला ने जो कुव्वत मर्द को अता की है, बड़े बड़े काम करने की जो सलाहियत मर्द को अता की है वह औरत को नहीं दी गई। लिहाज़ा इमारत और सरबराही का काम सही तौर मर्द ही अंजाम दे सकता है। इस मसअला के लिए अपनी अकल से फैसला करने के बजाए उस जात से पूछें जिसने इन दोनों को पैदा किया है। चुनांचे खालिके कायनात ने कुरान करीम में वाज़ेह अल्फाज़ के साथ इस मसअला का हल पेश कर दिया। इन आयात में अल्लाह तआला ने वाज़ेह अल्फाज़ में ज़िक्र फरमा दिया कि मर्द वही ज़िन्दगी के सफर का सरबराह रहेगा और फैसला करने का हक़ मर्द ही को हासिल है अगरचे मर्द को चाहिए कि औरत को अपने फैसलों में शामिल करे। मर्द हज़रात भी इस बात को अच्छी तरह जहन नशीन कर लें कि बेशक मर्द औरत के लिए कवाम यानी अमीर की हैसियत रखता है लेकिन साथ ही दोनों के दरमियान दोस्ती का भी तअल्लुक है यानी इतिजामी तौर पर तो मर्द कवाम यानी अमीर है तकिन आपसी तअल्लुक दोस्ती जैसा है ऐसा तअल्लुक नहीं है जैसा मालिक और नौकरानी के दरमियान होता है।

एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फरमाया कि जब तुम मुझसे राजी होती हो और जब तुम मुझसे नाराज होती हो, दोनों हालतों में मुझे इल्म हो जाता है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा या रसूलुल्लाह! किस तरह इल्म हो जाता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम मुझसे राजी होती हो रब्बे मोहम्मद के अल्फाज़ के साथ कसम खाती हो और जब तुम मुझसे नाराज होती

हो रब्बे इब्राहिम के अल्फाज़ के साथ कसम खाती हो। उस वक़्त तुम मेरा नाम नहीं लेती बल्कि हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का नाम लेती हो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फरमाया कि या रसूलुल्लाह मैं सिर्फ आपका नाम छोड़ती, हनाम के अलावा कुछ नहीं छोड़ती। (बुखारी)

अब आप अंदाज़ा लगाएँ कि कौन नाराज़ हो रहा है? हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा। और किससे नाराज़ हो रही हैं? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से। मालूम हुआ कि अगर बीवी नाराज़गी का इज़हार कर रही है तो मर्द की कवामियत यानी इमारत के खिलाफ नहीं है क्योंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़ी खुशी तबई के साथ उसका ज़िक्र फरमाया कि मुझे तुम्हारी नाराज़गी का पता चल जाता है।

इसी तरह वाक़या उफ़क को याद करें, जिसमें हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तुहमत लगाई गई थी जिसकी वजह से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर क़यामत सुगरा बरपा हो गई थी। हल्ताकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी शुबहा हो गया था कि कहीं हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वाकई गलती तो नहीं हो गई है। जब आयते बराअत नाज़िल हुई जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत का इलान किया तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ बहुत खुश हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा खड़ी हो जाओ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम करो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बिस्तर पर लेटी हुई थीं और बराअत की आयात

सुन लीं और लेटे लेटे फरमाया कि यह तो अल्लाह तआला का करम है कि उसने मेरी बराअत (अपने पाक कलाम में) नाज़िल फरमादी लेकिन अल्लाह तआला के सिवा किसी का शुक्र अदा नहीं करती क्योंकि आप लोगों ने तो अपने दिल में यह इहतिमाल पैदा कर लिया था कि शायद मुझसे गलती हो गई है। (बुखारी)

बज़ाहिर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होने से इराज फरमाया लेकिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको बुरा नहीं समझा इसलिए कि यह नाज की बात है। यह नाज दर हकीकत इसी दोस्ती का तकाजा है जो मियां बीवी के दरमियान होती है। मालूम हुआ कि मियां बीवी के दरमियान हाकिमियत और महकूमियत का रिश्ता नहीं बल्कि दोस्ती भी रिश्ता है और इस दोस्ती का हक यह है कि इस किसम के नाज को बर्दाशत किया जाए।

बहरे हाल! अल्लाह तआला ने मर्द को कवाम बनाया है इसलिए फैसला उसका मानना होगा। हां बीवी अपनी राय और मशविरा दे सकती है और शरीअत ने मर्द को यह हिदायत भी दी है कि वह हत्तल इमकान बीवी की दिलदारी का ख्याल भी करे लेकिन फैसला उसी का होगा। लिहाज़ा अगर बीवी चाहे कि हर मामला में फैसला उनका चले और मर्द कवाम नह बने तो यह सूत फितरत के खिलाफ है, शरीअत के खिलाफ है, अकल के खिलाफ है और इंसाफ के खिलाफ है और इसका नतीजा घर की बरबादी के सिवा और कुछ नहीं है।

2) शौहर के माल व आबरू की हिफाज़त

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "जो औरतें नेक हैं वह अपने शौहरों की ताबिदारी करती हैं और अल्लाह के हुकुम के मुवाफिक नेक औरतें शौहर की गैर हाजरी में अपने नफस और शौहर के माल की हिफाज़त करती हैं यानी अपने नफस और शौहर के माल में किसी किसम की ख्यानत नहीं करती हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं तुम्हें मर्द का सबसे बेहतरीन खजाना नह बताऊं? वह नेक औरत है, जब शौहर उसकी तरफ देखे तो वह शौहर को खुश करदे, जब शौहर उसको कोई हुकुम करे तो शौहर का कहना माने। अगर शौहर कहीं बाहर सफर में चला जाए तो उसके माल और अपने नफस की हिफाज़त करे। (अबू दाउद, नसई)

शौहर के माल की हिफाज़त में यह है कि औरत शौहर की इजाज़त के बेगैर शौहर के माल में कुछ नह ले और उसकी इजाज़त के बेगैर किसी को नह दे। हां अगर शौहर वाकई बीवी बीवी के अखराजात में कमी करता है तो बीवी अपने और औलाद के खर्च को पूरा करने के लिए शौहर की इजाज़त के बेगैर माल ले सकती है। जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिन्द बिनत उतबा से कहा था जब उन्होंने अपने शौहर अबू सुफयान के ज़्यादा बखील होने की शिकायत की थी। इतना माल ले लिया करो जो तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के मुतवस्सित खर्च के लिए काफी हो। (बुखारी व मुस्लिम)

शौहर की आबरू की हिफाज़त में यह है कि औरत शौहर की इजाज़त के बेगैर किसी को घर में दाखिल नह होने दे, किसी नामहरम से बिला ज़रूरत बा तनह करे। शौहर की इजाज़त के बेगैर घर से बाहर नह निकले।

3) घर के अंदरूनी निज़ाम को चलाना और बच्चों की तरबियत करना-यह औरतों की वह जिम्मेदारी है जो इनकी खिलकत के मकासिद में से एक अहम मक़सद है बल्कि यह वह कुम्हियादी जिम्मेदारी है जिसकी अदाएगी औरतों पर लाज़िम है। औरतों को इस जिम्मेदारी के अंजाम देने में कोई कमी नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि इसी जिम्मेदारी को सही तरीका पर अंजाम देने से फैमली में आराम व सुकून पैदा होगा नीज़ औलाद दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी से सरफराज होगी। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब सहाबा अपनी बेटी या बहन को रुख़सत करते थे तो उसको शौहर की खिदमत और बच्चों की बेहतरीन तरबियत की खुसूसी ताकीद करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया औरत अपने शौहर के घर में निगहबान और जिम्मेदार है और उससे उसके बच्चों की तरबियत वगैरह के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा।

बीवी की चद अहम और दूसरी जिम्मेदारियां

4) बीवी शौहर की इजाज़त के बेगैर नफली रोज़ा नह रख- हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया किसी औरत के लिए हलाल नहीं कि वह अपने शौहर की इजाज़त से यानी किसी औरत के लिए नफली रोज़ा रखना शौहर की इजाज़त के बेगैर हलाल नहीं।

5) औरत के दिल में शौहर के पैसे का दर्द हो- औरत के दिलमें शौहर के पैसे का दर्द होना चाहिए ताकि शौहर का पैसा फज़ूल खर्ची में खर्च नह हो। घर को नौकरानियों पर नहीं छोड़ना चाहिए कि वह

जिस तरह चाहें करती रहें बल्कि औरत की ज़िम्मेदारी है कि वह घर के दाखिली तमाम कामों पर निगाह रखे।

चद मुशतरका हुक्क और जिम्मेदारियां

जहां तक मुमकिन हो खुशी व राहत व सुकून को हासिल करने और रंज व गम को दूर करने के लिए एक दूसरे का मदद करना चाहिए। एक दूसरे के राज लोगों के सामने ज़िक्र नह किए जाएँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क़यामत के दिन अल्लाह की नजरां में सबसे बदबख्त इंसान वह होगा जो मियां बीवी के आपसी राज को दूसरों के सामने बयान करे। (मुस्लिम)

शौहर बाहर के काम और बीवी घरैलू काम अजाम दे

कुरान व सुन्नत में वाज़ेह तौर पर ऐसा कोई कतई उस्स नहीं मिलता जिसकी बुनियाद पर कहा जाए कि खाना पकाना औरतों के जिम्मा है, अलबत्ता हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी के बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के दरमियान काम की जो तकसीम की वह इस तरह थी कि बाहर का काम हज़रत अली देखते थे, घरैलू काम मसलन खाना बनाना, घर की सफाई करना वगैरह हज़रत फातिमा के जिम्मा था। लेकिन याद रखें कि ज़िन्दगी काज़्बी पेचीदगियों से नहीं चला करती, लिहाज़ा जिस तरह कुरान व हदीस में मज़कूर नहीं है कि खाना पकाना औरत के जिम्मा है इसी तरह कुरान व सुन्नत में कहीं वाज़ेह तौर पर यह मौज़ूद नहीं है कि शौहर के जिम्मा बीवी का इलाज कराना लाज़िम

है, इसी तरह कुरान व सुन्नत में मर्द के जिम्मा नहीं है कि वह बीवी को उसके वालिदैन के धरैलू मुलाकात के लिए ले जाया करे। इसी तरह अगर बीवी के वालिदैन या भाई भहन उसके घर आए ंतो मर्द के जिम्मा नहीं है कि मुर्ग मुसल्लम व कुफते व कबाब वगैरह ले कर आए। मालूम हुआ कि दोनों एक दूसरे की खिदमत के जज़्बा से रहें। बाहर के काम मर्द अंजाम दे और औरत घर के मामलात को बखुबी अंजाम दे।

मियां बीवी की मुशतरका जिम्मेदारियों में से एक अहम जिम्मेदारी यह है कि दोनों एक दूसरे की जिंसी ज़रूरत को पूरा करें। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब मर्द अपनी तरफ बुलाए (यह मियां बीवी के मखसूस तअल्लुकात से किनाया है, कि शौहर अपनी बीवी को उन तअल्लुकात को कायम करने के लिए बुलाए) और वह औरत नह आए या ऐसा तरज इख्तियार करे कि जिससे शौहर का वह मंशा पूरा नह हो और उसकी वजह से शौहर नाराज हो जाए तो सारी रात सूबह तक फरिश्ते उस औरत पर लानत भेजते रहते हैं, यानी उस औरत पर खुदा की लानत हो और लानत के मानी यह है कि अल्लाह तआला की रहमत को उसको हासिल नहीं होगी। (बुखारी व मुस्लिम)

जिंसी ख्वाहिशात की तकमील पर अजर सवाब- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मियां बीवी के जो आपसी तअल्लुकात होते हैं अल्लाह तआला उनपर भी अजर अता फरमाएगा। सहाबा ने सवाल किया या रसूलुल्लाह! वह इंसान अपनी नफसानी ख्वाहिशात के तिहत करता है, उसपर क्या अजर? आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर वह नफसानी ख्वाहिश को नाजाएज़ तरीके से पूरा करता है तो उसपर गुनाह होता है या नहीं? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! गुनाह ज़रूर होता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया चूंकि मियां बीवी नाजाएज़ तरीका को छोड़ कर जाएज़ तरीके से नफसानी ख्वाहिशात को अल्लाह के हुकुम की वजह से कर रहे हैं, इसलिए इसपर भी सवाब होगा। (मुसनद अहमद)

अपने अहल व अयाल को जहन्नम की आग से बचाने के लिए मुशतरका फिक्र व कोशिश

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका इंधन इंसान है और पत्थर जिसपर सख्त दिल मज़बूत फरिश्ते मुक़र्रर हैं जिन्हें जो हुकुम अल्लाह तआला देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते बल्कि जो हुकुम दिया जाए बजालाते हैं।

जब मज़क़ूरा आयत नाज़िल हुई तो हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में तशरीफ लाए और फरमाया कि हम अपने आपको तो जहन्नम की आग से बचा सकते हैं मगर घर वालों का क्या करें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम उनको बुराईयों से रोकते रहो और अच्छाईयों का हुकुम करते रहो, इंशाअल्लाह यह अमल उनको जहन्नम की आग से बचाने वाला बनेगा।

विरासत में शिर्क त

दोनों में से किसी एक के इंतिकाल होने पर दूसरा उसकी विरासत में शरीक होगा।

शौहर और बीवी की विरासत में चार शकलें बनती हैं। (सूरह निसा 12)

बीवी के इंतिकाल पर (शौहर को $1/2$ मिलेगा)	औलाद मौजूद नह होने की सूरत में
--	--------------------------------

बीवी के इंतिकाल पर (शौहर को $1/4$ मिलेगा)	औलाद मौजूद होने की सूरत में
--	-----------------------------

शौहर के इंतिकाल पर (बीवी को $1/4$ मिलेगा)	औलाद मौजूद नह होने की सूरत में
--	--------------------------------

शौहर के इंतिकाल पर (बीवी को $1/8$ मिलेगा)	औलाद मौजूद होने की सूरत में
--	-----------------------------

बेटी अल्लाह की रहमत

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है। आसमानों और ज़मीन की सलतनत व बादशाहत सिर्फ अल्लाह ही के लिए है। वह जो चाहे पैदा करता है। जिसको चाहे बेटियां देता है। और जिसे चाहता है बेटा देता है। और जिसको चाहतो हैं बेटे और बेटियां दोनों अता कर देता है और जिसको चाहता है बांझ कर देता है। उसके यहां न लड़का पैदा होता है और न लड़की पैदा होती है, लाख कोशिश करे मगर औलाद नहीं होती है। यह सब कुछ अल्लाह तआला की हिकमत और मसलेहत पर मबनी है। जिसके लिए जो मुनासिब समझता है वह उसको अता फरमा देता है। लड़कियां और लड़के दोनों अल्लाह की नेमत हैं। लड़के और लड़कियों दोनों की ज़रूरत है। औरतें मर्द की मोहताज हैं और मर्द औरतों के मोहताज है। अल्लाह तआला अपनी हिकमते बालिगा से दुनिया में ऐसा निज़ाम कायम किया है कि जिस में दोनों की ज़रूरत है और दोनों एक दूसरे के मोहताज हैं।

अल्लाह की इस हिकमत और मसलेहत की रौशनी में जब हम अपना जाएज़ा लेते हैं तो हम में से बाज़ दोस्त ऐसे नज़र आएंगे कि जिनके यहां लड़के की बड़ी आरज़ूएं और तमन्नाएं की जाती हैं। जब लड़का पैदा होता है तो उस वक़्त बहुत खुशी का इज़हार किया जाता है और अगर लड़की पैदा हो जाए तो खुशी का इज़हार नहीं किया जाता है बल्कि बाज़ औकात बच्ची की पैदाइश पर शौहर अपनी बीवी पर, इसी तरह घर के दूसरे अफ़राद औरत पर नाराज होते हैं, हालांकि इसमें औरत को कोई कसूर नहीं है। यह सब कुछ अल्लाह की अता

है। किसी को ज़रूर बराबर भी एतेराज़ करने का कोई हक़ नहीं है। याद रखें कि लड़कियों को कमतर समझना ज़माने जाहिलियत के काफ़िरों का अमल था जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में ज़िक्र फरमाया “इनमें से जब किसी को लड़की होने की खबर दी जाए तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और दिल ही दिल में चुने लगता है, खूब सुन लो कि वह (कुफ़ारे मक्का) बहुत बुरा फैसला करते हैं।” (सूरह नहल 58,59) लिहाज़ा हमें बेटी के पैदा होने पर भी यकीनन खुशी व मसरत का इज़हार करना चाहिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेटियों की परवरिश पर जितने फ़ज़ाइल बयान फरमाए हैं बेटे की परवरिश पर इस क़दर बयान नहीं फरमाए।

लड़कियों की परवरिश के फ़ज़ाइल से मुतअल्लिक़ चंद अहादीस
हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों और वह उनके साथ बहुत अच्छे तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारे (उनके जो हुक्क़ शरीअत ने मुक़रर फरमाए हैं वह अदा करे, उनके साथ एहसान और सुलूक का मामला करे, उनके साथ अच्छा बरताव करे) और उनके हुक्क़ की अदाएगी के सिलसिले में अल्लाह तआला से डरता रहे तो अल्लाह तआला इसकी बदौलत उसको जन्नत में दाखिल फरमाएंगे। (तिर्मिज़ी)

इसी मज़मून की हदीस हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से भी मरवी है, मगर इसमें इतना इज़ाफ़ा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के इरशाद फरमाने पर किसी ने सवाल किया कि अगर किसी की एक बेटी हो (तो क्या वह इस सवाबे अज़ीम से महरूम रहेगा?) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स एक बेटी की इसी तरह परवरिश करेगा उसके लिए भी जन्नत है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जुन्नूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स पर लड़कियों की परवरिश और देख भाल की ज़िम्मेदारी हो और वह इसको सब्र व तहम्मूल से अंजाम दे तो यह लड़कियां उसके लिए जहन्नम से आड़ बन जाएंगी। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ये रिवायत हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स की दो या तीन बेटियां हों और वह उनकी अच्छे अंदाज़ से परवरिश करे (और जब शादी के काबिल हो जाएं तो उनकी शादी कर दे) तो मैं और वह शख्स जन्नत में इस तरह दाखिल होंगे जिस तरह यह दोनों उंगलियां मिली हुई हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से एक किस्सा मंकूल है, वह फरमाती हैं कि एक औरत मेरे पास आई जिसके साथ उसकी दो लड़कियां थीं, उस औरत ने मुझ से कुछ सवाल किया, उस वक़्त मेरे पास सिवाए एक खजूर के और कुछ नहीं था, वह खजूर मैंने उस औरत को दे दी, उस अल्लाह की बन्दी ने उस खजूर के दो टुकड़े किए और एक एक टुकड़ा दोनों बच्चियों के हाथ पर रख दिया, खुद कुछ नहीं खाया, हालांकि खुद उसे भी ज़रूरत थी, उसके बाद वह औरत बच्चियों को ले कर चली गई। थोड़ी देर के बाद हुज़ूर अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए तो मैंने उस औरत के आने और एक खजूर के दो टुकड़े करके बच्चियों को देने का पूरा वाक्या सुनाया। आपने इरशाद फरमाया जिसको दो बच्चियों की परवरिश करने का मौका मिले और वह उनके साथ शफक़त का मामला करे तो वह बच्चियां उसको जहन्नम से बचाने के लिए आड़ बन जाएंगी। (तिर्मिज़ी)

(वज़ाहत) मज़क़ूरा अहादीस से मालूम हुआ कि लड़कियों की शरीअते इस्लामिया के मुताबिक़ तालीम व तरबियत और फिर उनकी शादी करने पर अल्लाह तआला की तरफ से तीन फज़ीलतें हासिल होंगी:

- 1) जहन्नम से छुटकारा।
- 2) जन्नत में दाखला।
- 3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत में हमराही।

क़ुरान की आयात और दूसरी अहादीस की रौशनी में यह बात बड़े वुसूक से कही जा सकती है कि शरीअते इस्लामिया के मुताबिक़ औलाद की बेहतर तालीम व तरबियत वही कर सकता है जो अल्लाह से डरता हो जैसा कि पहली हदीस में उम्मरा (उनके हुक्क की अदाएगी के सिलसिले में अल्लाह तआला से डरता रहे)।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तर्ज़ अमल

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार बेटियां थीं हज़रत फातिमा, हज़रत ज़ैनब, हज़रत रूक़य्या और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुन। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी चारों बेटियों से बहुत मोहब्बत फरमाते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की तीन बेटियों का इंतिकाल आपकी ज़िन्दगी में ही हो गया था, हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल के छः माह बाद हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियां जन्मतुल बक्री में मदफून हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ बहुत ही शफकत और मोहब्बत का मामला फरमाया करते थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर में तशीफ ले जाते तो सबसे आखिर में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलते और जब सफर से वापस तशरीफ लाते तो सबसे पहले हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ ले जाते।

मसअला - जहां तक मोहब्बत का तअल्लुक है उसका तअल्लुक दिल से है और इसमें इंसान को इख्तियार नहीं है, इस लिए इसमें इंसान बराबरी करने का मुकल्लफ नहीं है, यानी किसी एक बच्चा या बच्ची से ज़्यादा मोहब्बत कर सकता है, मगर इस मोहब्बत का बहुत ज़्यादा इज़हार करना कि जिससे दूसरे बच्चों को एहसास हो मना है।

मसअला - औलाद को हदया और तोहफा देने में बराबरी ज़रूरी है, लिहाज़ा मां बाप अपनी ज़िन्दगी में औलाद के दरमियान अगर पैसे या कपड़े या खाने पीने की कोई चीज़ तकसीम करें तो उसमें बराबरी ज़रूरी है और लड़की को भी उतना ही दें जितना लड़के को दें। शरीअत का यह हुकुम कि लड़की का लड़के के मुकाबले में आधा हिस्सा है यह हुकुम बाप के इंतिकाल के बाद उसकी मीरास में है, ज़िन्दगी का कायदा यह है कि लड़की और लड़के दोनों को बराबर दिया जाए।

मसअला - अगर मां बाप को ज़रूरत के मौके पर औलाद में किसी एक पर कुछ ज़्यादा खर्च करना पड़े तो कोई हर्ज नहीं है, मसलन बीमारी, तालीम और इसी तरह कोई दूसरी ज़रूरत हो तो खर्च करने में कमी बेशी करने में कोई गुनाह और पकड़ नहीं है, लिहाज़ा हसबे ज़रूरत कमी बेशी हो जाए तो कोई हर्ज नहीं।

मसअला - बेटे की शादी के बाद भी बेटे का हक़ मीरास खत्म नहीं होता है, यानी बाप के इंतिकाल के बाद भी वह बाप की जायदाद में शरीक रहती है।

अक्रीका के मसाइल

अक्रीका के मानी काटने के हैं। शरई इस्तिलाह में नौमूँद बच्चा/बच्ची की जानिब से उसकी पैदाइश के सातवें दिन जो खून बहाया जाता है उसे अक्रीका कहते हैं। अक्रीका करना सुन्नत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम से सही और मुतावितर अहादीस से साबित है।

इसके चद अहम फायदे यह हैं

— जिन्दगी की इब्तिदाई सांसों में नौमौलूद बच्चा/बच्ची के नाम से खून बहा कर अल्लाह तआला से इसका तक्क़रूब हासिल किया जाता है।

— यह इस्लामी Vaccination है जिसके ज़रिया अल्लाह तआला के हुकुम से बाज़ परेशानियों, आफतों और बीमारियों से राहत मिल जाती है। (हमें सुन्नियावी Vaccination के साथ इस Vaccination का भी एहतेमाम करना चाहिए)।

— बच्चा/बच्ची की पैदाइश पर जो अल्लाह तआला की एक अज़ीम नेमत है खुशी का इज़हार हो जाता है।

— बच्चा/बच्ची की अक्रीका करने पर कल क़यामत के दिन बाप बच्चा/बच्ची की शिफाअत का मुस्तहिक्क बन जाएगा जैसा कि हदीस 2 में है।

— अक्रीका की दावत से रिश्तेदार, दोस्त व अहबाब और दूसरे मुतअल्लिकीन के दरमियान तअल्लुक बढ़ता है जिससे उनके दरमियान मोहब्बत व उलफत पैदा होती है।

अक्रीका के मुतअल्लिक चद अहादीस

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बच्चा/बच्ची के लिए अक्रीका है, उसकी जानिब से तुम खून बहाओ और उससे गन्दगी (सर के बाल) को दूर करो। (बुखारी)

2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हर बच्चा/बच्ची अपना अक्रीका होने तक गिरवी है। उसकी जानिब से सातवें दिन जानवर ज़बह किया जाए, उस दिन उसका नाम रखा जाए और सर मुंडवाया जाए। (तिर्मिज़ी तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसई, मुसनद अहमद)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान “हर बच्चा/बच्ची अपना अक्रीका होने तक गिरवी है” की शरह उलमा ने ये बयान की है कि कल क़यामत के दिन बच्चा/बच्ची को बाप के लिए शिफाअत करने से रोक दिया जाएगा अगर बाप ने इस्तिअत के बावजूद बच्चा/बच्ची का अक्रीका नहीं किया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि हत्तल इमकान बच्चा/बच्ची का अक्रीका करना चाहिए।

3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लड़के की जानिब से दो बकरियां और लड़की की जानिब से एक बकरी है। (तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद)

4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया लड़के की जानिब से दो बकरे और लड़की की जानिब से एक बकरा है। अक्रीका के जानवर नर हों या मादा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यानी बकरा या बकरी जो चाहें ज़बह कर दें। (तिर्मिज़ी)

5) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन का अक़ीका सातवें दिन किया, इसी दिन उनका नाम रखा और हुकुम दिया कि उनके सरों के बाल मूँड दिए जाएं। (अबू दाउद)

इन मज़क़ूरा और दूसरी अहादीस की रौशनी में उलमा फरमाते हैं कि बच्चा/बच्ची की पैदाइश के सातवें दिन अक़ीका करना, बाल मूँडवाना, नाम रखना और खतना कराना सुन्नत है। लिहाज़ा बाप की ज़िम्मेदारी है कि अगर वह अपने नौमौलूद बच्चे/बच्ची का अक़ीका कर सकता है तो उसे चाहिए कि वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस सुन्नत को ज़रूर जिन्दा करे, ताकि अल्लाह के नज़दीक नौमौलूद बच्चा/बच्ची को अल्लाह के हुकुम से बाज़ आफतों और बीमारियों से राहत मिल सके, नीज़ कल क़यामत के दिन बच्चा/बच्ची की शिफाअत का मुस्तहिक बन सके।³

क्या सातवें दिन अक़ीका करना शर्त है?

अक़ीका करने के लिए सातवें दिन का इख्तियार करना मुस्तहब है। सातवें दिन को इख्तियार करने की अहम वजह यह है कि ज़मानाके सातों दिन बच्चा/बच्ची पर गुज़र जाते हैं। लेकिन अगर सातवें दिन मुमकिन न हो तो सातवें दिन की रिआयत करते हुए चैदहवें या इकीसवें दिन करना चाहिए जैसा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का फरमान अहादीस की किताबों में मौजूद है। अगर कोई शख्स सातवें दिन के बजाए चौथे दिन या आठवें या दसवें दिन या उसके बाद कभी भी अक़ीका करे तो यकीनन अक़ीका की सुन्नत

अदा हो जाएगी, उसके फायदे इंशाअल्लाह हासिल हो जाएंगे, अगरचे अक्कीका का मुस्तहब वक़्त छूट गया।

क्या बच्चा/बच्ची के अक्कीका में कोई फर्क है?

बच्चा/बच्ची दोनों का अक्कीका करना सुन्नत है अलबत्ता अहादीस की रौशनी में सिर्फ एक फर्क है, वह यह कि बच्चा के अक्कीका किए दो और बच्ची के अक्कीका के लिए एक बकरा/बकरी ज़रूरी है। लेकिन अगर किसी शख्स के पास बच्चा के अक्कीका के लिए दो बकरे ज़बह करने की इस्तितात नहीं है तो वह एक बकरा से भी अक्कीका कर सकता है जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत अबू दाउद में मौजूद है।

बच्चा/बच्ची के अक्कीका में फर्क क्यों रखा गया?

इस्लाम ने औरतों को मुआशरे में एक ऐसा अहम और बावकार मक़ाम दिया है जो किसी भी समावी या खुद साख़ता मजहब में नहीं मिलता, लेकिन फिर भी कुरान की आयात और अहादीसे शरीफा की रौशनी में यह बात बड़े वुसूक के साथ कही जा सकती है कि अल्लाह तआला ने इस दुनिया के निज़ाम को चलाने के लिए मर्द को औरतों पर किसी दरजे में फौक़ियत दी है जैसा कि दुनिया के वज़ूद से लेकर आज तक हर क़ौम में और हर जगह देखने को मिलता है। मसलन हमल और विलादत की तमाम तर तकलीफें और मुसीबतें सिर्फ औरत ही झेलती है। लिहाज़ा शरीअते इस्लामिया ने बच्चे के अक्कीका के लिए दो और बच्ची के अक्कीका के लिए एक खून बहाने

का जो हुकुम दिया है उसकी हकीकत खालिके कायनात ही बेहतर जानता है।

अक्रीका में बकरा/बकरी के अलावा दूसरे जानवर मसलन ऊट, गाए वगैरह को ज़बह किया जा सकता है?

इस बारे में उलमा का इखतेलाफ है, मगर तहकीकी बात यह है कि हदीस नम्बर (1 और 2) की रौशनी में बकरा/बकरी के अलावा ऊट गाए को भी अक्रीका में ज़बह कर सकते हैं, क्योंकि इस हदीस में अक्रीका में खूँ बहाने के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बकरा/बकरी की कोई शर्त नहीं रखी, लिहाज़ा ऊट, गाए की कुर्बानी दे कर भी अक्रीका किया जा सकता है। नीज़ अक्रीका के जानवर की उम्र वगैरह के लिए तमाम उलमा ने ईदुल अज़हा की कुर्बानी के जानवर के शराएत तसलीम किए हैं।

क्या ऊट गाए वगैरह के हिस्सा में अक्रीका किया जा सकता है?

अगर कोई शख्स अपने 2 लड़कों और 2 लड़कियों का अक्रीका एक गाए की कुर्बानी में करना चाहे, यानी कुर्बानी की तरह हिस्सों में अक्रीका करना चाहिए तो इसके जवाज़ से मुतअल्लिक उलमा का इखतेलाफ है, हमारे उलमा ने कुर्बानी पर क़यास करके उसकी इजाज़त दी है, अलबत्ता एहतियात इसी में है कि इस तरीके पर अक्रीका न किया जाए, बल्कि बच्चे/बच्ची की तरफ से कम से कम एक खून बहाया जाए।

क्या अक़ीका के गोश्त की हड्डियां तोड़ कर खा सकते हैं?

बाज़ अहादीस और ताबेईन के अक़वाल की रौशनी में बाज़ उलमा ने लिखा है कि अक़ीका के गोश्त के एहतेराम के लिए जानवर की हड्डियां जोड़ों ही से काट कर अलग करनी चाहिए। लेकिन शरीअते इस्लामिया ने इस मौजू से मुतअल्लिक कोई ऐसा उसूल व ज़ाबता नहीं बनाया है कि जिसके खिलाफ अमल नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह अहादीस और ताबेईन के अक़वाल बेहतर व अफज़ल अमल को ज़िक्र करने के मुतअल्लिक हैं। लिहाज़ा अगर आप हड्डियां तोड़ कर भी गोश्त बना कर खाना चाहें तो कोई हर्ज नहीं है। याद रखें कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में आम तौर पर गोश्त छोटा छोटा करके यानी हड्डियां तोड़ कर ही इस्तेमाल किया जाता है।

क्या बालिग मर्द और औरत का भी अक़ीका किया जा सकता है?

जिस शख्स का अक़ीका बचपन में नहीं किया गया जैसा कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में अक़ीका छोड़ कर छटी वगैरह करने का ज़्यादा एहतेमाम किया जाता है जो कि ग़लत है। लेकिन अब बड़ी उम्र में उसका शुरु हो रहा है तो वह यकीनन अपना अक़ीका कर सकता है, क्योंकि बाज़ रिवायात से पता चलता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नुबूत मिलने के बाद अपना अक़ीका किया (इब्ने हज़म, तहावी) नीज़ अहादीस में किसी भी जगह अक़ीका करने के आखरी वक़्त का ज़िक्र नहीं किया गया है। यह बात ज़ेहन में रखें कि बड़ी बच्ची के सर के बाल मुंडवाना जाएज़ नहीं है, ऐसी

सूरत में बाल न कटवाएं क्योंकि बाल बटवाए बेगैर भी अक्कीका की सुन्नत अदा हो जाएगी।

दूसरे मसाइल

कुर्बानी के जानवर की तरह अक्कीका के जानवर की खाल या तो गरीब व मसाकीन को दे दें या अपने घरैलू इस्तेमाल में ले लें।

खाल या खाल को बेच करके उसकी कीमत कसाई को बतौर उजरत देना जाएज़ नहीं है।

कुर्बानी के गोश्त की तरह अक्कीका के गोश्त को खुद भी खा सकते हैं और रिश्तेदारों को भी खिला सकते हैं। अगर कुर्बानी के गोश्त के 3 हिस्से कर लिए जाएं तो बेहतर है, एक अपने लिए, एक रिश्तेदार के लिए और तीसरा हिस्सा गरीबों के लिए, लेकिन यह तीन हिस्से करना कोई ज़रूरी नहीं है।

अक्कीका के गोश्त को पका कर रिश्तेदारों को बुला कर भी खिला सकते हैं और कच्चा गोश्त भी तकसीम कर सकते हैं।

(नोट) अगर बच्चा/बच्ची की पैदाइश जुमा के रोज़ हुई है तो सातवां दिन जुमेरात होगा।

बच्चे की पैदाइश के वक़्त कान में अज़ान और इक़ामत

शरीअते इस्लामिया ने बच्चे की पैदाइश के वक़्त जिन अहकामे शरईया से उम्मत मुस्लिमा को आगाह किया है उनमें से एक विलादत के फौरन बाद बच्चे के दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कहना है।

हज़रत अबू राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं जब हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश हुई तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु के कान में अज़ान कही। (तिर्मिज़ी, अबू दाउद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश के वक़्त उनके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही। (बैहकी)

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बच्चे की पैदाइश के वक़्त दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही जाए तो उम्मे सिबयान से हिफाज़त होती है। (बैहकी) उम्मे सिबयान से मुराद एक हवा है जिससे बच्चे को नुक़सान पहुंच सकता है। बाज़ हज़रात ने इससे मुराद जिन लिया है और कहा है कि बच्चे के कान में अज़ान और इक़ामत कहने पर अल्लाह तआला के हुकुम से इससे हिफाज़त हो जाती है।

अज्ञान और इक़ामत कहने की बाज़ हिकमतें

1) विलादत के वक़्त अज्ञान कहने का एक फायदा यह है कि बच्चे के कानों में सबसे पहले उस ज़ाते अक़दस का नामे नामी दाख़ि होता है जिसने एक हकीर क़तरे से एक ऐसा खूबसूरत इंसान बना दिया है जिसे अशरफ़ुल मखलूक़ात कहा जाता है।

2) अहादीस (बुखारी व मुस्लिम) में आता है कि अज्ञान और इक़ामत के कलेमात सुन कर शैतान दूर भागता है। चूँकि बच्चे की पैदाइश के वक़्त शैतान भी घात लगा कर बैठता है तो अज्ञान और इक़ामत की आवाज़ सुनते ही उसके असर में कमी वाके होती है।

3) दुनिया दारुल इमतिहान है, इसलिए यहां आते ही बच्चे को सबसे पहले देने इस्लाम और इबादते इलाही का दर्स दिया जाता है

नोट - बच्चे के कान में अज्ञान और इक़ामत कहने के मुतअल्लिक़ रिवायात में ज़ोफ़ मौजूद है, लेकिन बहुत से शवाहिद के बिना पर इन अहादीस को तक़वीयत मिल जाती है। नीज़ शुरू से ही उम्मते मुस्लिमा का अमल इस पर रहा है। इमाम तिर्मिज़ी ने हदीस को सही करार देकर फरमाया कि उम्मते मुस्लिमा का अमल भी इस पर चला आ रहा है। लिहाज़ा मालूम हुआ कि हमें बच्चे की पैदाइश के वक़्त हत्तल इमकान दाएं कान में अज्ञान और बाएं कान में इक़ामत ज़रूर कहनी चाहिए जैसा कि अल्लामा इबनुल कैम ने अपनी मशहूर व मारुफ़ किताब “तुहफतुल वदूद फी अहकामिल मौलूद” में तफसील से ज़िक़्र किया है। नीज़ शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ व दूसरे उलमा ने तहरीर फरमाया है।

मसअला - अगर किसी बच्चे की पैदाइश के वक़्त अज़ान और इक़ामत के कलेमात नहीं कहे गए तो बाद में भी यह कलेमात कहे जा सकते हैं लेकिन अगर ज़्यादा ही अरसा गुज़र गया तो फिर अज़ान और इक़ामत के कलेमात कहने की ज़रूरत नहीं।

औरतों के खुसूसी मसाइल

हैज़ व निफास के मसाइल

शरीअते इस्लामिया में हैज़ उस खून को कहते हैं जो औरत के रहम (बच्चेदानी) के अंदर से मुतअय्यन औकात में बेगैर किसी बीमारी के निकलता है। चूंकि यह खून तकरीबन हर माह आता है, इसलिए इसको माहवारी (MC) भी कहते हैं। इस खून को अल्लाह तआला ने तमाम औरतों के लिए मुक़द्दर कर दिया है। हमल के दौरान यही खून बच्चे की गिज़ा बन जाता है। लड़की के बालिग होने (12-13 साल की उम्र) से तकरीबन 50-55 साल की उम्र तक यह खून औरतों को आता रहता है। हैज़ की कम से कम और ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत के मुतअल्लिक उलमा की राय बहुत हैं, अलबत्ता आम तौर पर इसकी मुद्दत 3 दिन से 10 दिन तक रहती है।

निफास उस खून को कहते हैं जो मा के रहम से बच्चे की विलादत के वक़्त और विलादत के बाद निकलता रहता है। निफास की कम से कम मुद्दत की कोई हद नहीं है (एक दो रोज में भी बन्द हो सकता है) और ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत 40 दिन है। (मुस्लिम, अबू दाउद, तिर्मिज़ी) लिहाज़ा 40 दिन से पहले जब भी औरत पाक हो जाए यानी उसका खून आना बन्द हो जाए तो वह गुस्ल करके नमाज़ शुरू कर दे। खून बन्द हो जाने के बाद भी 40 दिन तक इंतिज़ार करना और नमाज़ वगैरह से रुके रहना ग़लत है।

हैज़ या निफास वाली औरत के लिए नीचे लिखे हुए उमूर नाजाएज़ हैं

1) इन दोनों हालत में सोहबत करना। (सूरह बकरह 222) अलबत्ता इन दिनों में मुमामअत के सिवा हर जाएज़ शकल में इस्तिमता किया जा सकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (हमबिस्तरी) के सिवा हर काम कर सकते हो।

(मुस्लिम)

2) नमाज़ और रोज़े की अदागी। (मुस्लिम) हैज़ से पाक व साफ हो जाने के बाद औरत रोज़े की कज़ा करेगी, लेकिन नमाज़ की कज़ा नहीं करेगी। (बुखारी व मुस्लिम) नमाज़ रोज़ा में फर्क की वजह अल्लाह ही ज़्यादा जानता है, फिर भी उलमा ने लिखा है कि नमाज़ ऐसा अमल है जिसकी बार बार तकरार होती है लिहाज़ा मुमकिन है कि मशक्कत और परेशानी से बचने के लिए उसकी कज़ा का हुकुम नहीं दिया गया, लेकिन रोज़ा का मामला उसके बरखिलाफ है (साल में सिर्फ एक मरतबा उसका वक़्त आता है) लिहाज़ा रोज़े की कज़ा का हुकुम दिया गया है।

3) कुरान करीम बेगैर किसी हायल (कपड़े) के छूना। कुरान करीम को सिर्फ पाकी की हालत में ही छुआ जा सकता है, लिहाज़ा नापाकी के दिनों में औरत किसी कपड़े मसलन बाहरी गिलाफ के साथ ही कुरान को छुए। (सूरह वाक़्या 79, नसई)

4) बैतुल्लाह का तवाफ करना। (बुखारी व मुस्लिम) अलबत्ता सई (सफा मरवा पर दौड़ना) नापाकी की हालत में की जा सकती है (बुखारी)

5) मस्जिद में दाखिल होना। (अबू दाउद) अगर औरत मस्जिदे हराम या किसी दूसरी मस्जिद में है और नापाकी का वक़्त शुरू हो गया तो औरत को चाहिए कि फौरन मस्जिद से बाहर निकल जाए, अलबत्ता सफा मरवा या मस्जिदे हराम के बाहर सेहन में किसी जगह बैठ सकती है।

6) बेगैर छुए हुए कुरान करीम तिलावत करना। (अबू दाउद) इस सिलसिले में उलमा की राय मुत्तलिफ हैं, अलबत्ता तमाम उलमा इस बात पर मुत्तफिक हैं कि ज़्यादा एहतियात इसी में है कि इन दिनों में कुरान करीम की तिलावत बेगैर देखे भी न की जाए। अलबत्ता कुरान करीम में वारिद अज़कार और द्वाएं इन दिनों में पढ़ी जा सकती हैं।

(नोट)

— मियां बीवी का हैज़ की हालत में सोहबत करना और पीछे के रास्ते को किसी भी वक़्त इख्तियार करना हराम है।

— हैज़ (माहवारी - MC) को वक़्ती तौर पर रोकने वाली दवाएं इस्तेमाल करने की शरअन गुनजाईश है।

— हैज़ या निफास वाली औरत का खून जिस नमाज़ के वक़्त शुरू हुआ अगर खून शुरू होने से पहले नमाज़ की अदाएंगी न कर सकी तो फिर उस नमाज़ की कज़ा उस पर वाजिब नहीं है। अलबत्ता जिस नमाज़ के वक़्त में रूख़ बन्द होगा गुस्ल करके उस नमाज़ की अदाएंगी उसके ज़िम्मे होगी।

इस्तिहाज़ा के मसाइल

हैज़ या निफास के अलावा बीमारी की वजह से भी औरत को कभी कभी खून आ जाता है जिसको इस्तिहाज़ा कहा जाता है। इस बीमारी के खून (इस्तिहाज़ा) के निकलने से वज़ू टूट जाता है मगर नमाज़ और रोज़ा की अदाएगी उस औरत के लिए माफ नहीं है, नीज़ इन बीमारी के दिनों में सोहबत भी की जा सकती है। (अबू दाउद, नसई)

(नोट)

अगर किसी औरत को बीमारी का खून हर वक़्त आने लगे यानी खून के क़तरे हर वक़्त निकल रहे हैं कि थोड़ा सा वक़्त भी नमाज़ के अदाएगी के लिए नहीं मिल पा रहा है तो उसका हुकुम उस शख्स की तरह है जिसको हर वक़्त पेशाब के क़तरात गिरने की बीमारी हो जाए कि वह एक वक़्त के लिए वज़ू करे और उस वक़्त में जितनी चाहे नमाज़ पढ़े, क़ुरान की तिलावत करे, दूसरी नमाज़ का वक़्त शुरू होने पर उसको दूसरा वज़ू करना होगा। (बुखारी व मुस्लिम)

मानेअ हमल के ज़राये का इस्तेमाल

शरीअते इस्लामिया ने अगरचे नसलों को बढ़ाने की तर्गीब दी है, लेकिन फिर भी ऐसे असबाब इख्तियार करने की इजाज़त दी है जिससे वक़्ती तौर पर हमल न ठहरे, मसलन दवाओं या कंडोम का इस्तेमाल या अज़ल करना (मनी को शरमगाह के बाहर निकालना)

इसकाते हमल (Abortion)

- अगर हमल ठहर जाए तो इसकाते हमल जाएज़ नहीं है। (सूरह बनी इसराइल 31, सूरह अनआम 151)
- अलबत्ता शरई वजहे जवाज़ पाए जाने की सूरत में बुह भी निहायत महदूद दायरे में हमल का इसकात जाएज़ है।
- चार महीने पूरे हो जाने के बाद हमल का इसकात बिल्कुल हराम है, क्योंकि वह एक जान को क़त्ल करने के मुतरादिफ़ है।
- अगर किसी वजह से हमल के बरकरार रहने से मां की जान को खतरा हो जाए तो मां की ज़िन्दगी को बचाने के लिए चार महीने के बाद भी हमल का इसकात जाएज़ है। यह महज दो नुक़सान में से बड़े नुक़सान को दूर करने और दो मसलहतों में से बड़ी मसलत को हासिल करने की इजाज़त दी गई है।

दूध पिलाने से हरमत का मसअला

अगर कोई औरत किसी दो साल से कम उम्र के बच्चे को अपना दूध पिला दे तो वह दोनों मां बटे के हुकुम में हो जाते हैं, लेकिन कुरान व हदीस की रौशनी में जमहूर उलमा का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि रिज़ाअत (दूध पिलाने) के लिए बुनियादी शर्त यह है कि दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले बच्चे ने दूध पिया हो। जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है “जिन औरतों का इरादा दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करने का है वह अपनी औलाद को दो साल पूरा दूध पिलाएं।” (सूरह बकरह 233)

नीज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रिज़ाअत से हरमत उसी वक़्त साबित होती है जबकि रिज़ाअत (दूध

पिलाना) दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले हो। (तिर्मिज़ी) यानी दूध पिलाने से मां बेटे का रिश्ता उसी वक़्त होगा जबकि दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले बच्चे को दूध पिलाया जाए। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को ज़िक्र करने के बाद फरमाया हदीस सही है और सहाबए किराम का अमल भी यही था कि रिज़ाअत से हुरमत उसी वक़्त साबित होगी जब दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले बच्चे ने दूध पिया हो। दूध छुड़ाने की मुद्दत के बाद किसी मर्द को दूध पिलाने से कोई हुरमत साबित नहीं होती है। (तिर्मिज़ी)

इमाम अबू हनीफा ने अगरचे ढाई साल तक बच्चे को दूध पिलाने की गुंजाइश रखी है, अलबत्ता उलमा-ए-अहनाफ का फतवा दो साल तक ही दूध पिलाने का है। अगर कोई शख्स अपनी बीवी का दूध पीले तो उससे निकाह पर कोई फर्क नहीं पड़ता, अलबत्ता ऐसा करने से बचना चाहिए। सहाबए किराम के ज़माने से आज तक उम्मते मुस्लिमा के 99.99% मुहद्दिसीन, मुफस्सेरीन, मुफक्केरीन, फुक्कहा नीज़ चारों इमाम और जमहूर उलमाए किराम इस बात पर मुत्तफिक हैं कि किसी मर्द को औरत का दूध पिलाने से हुरमत साबित नहीं होती है, यानी दोनों के दरमियान किसी भी शक्ल में मां बेटे का रिश्ता नहीं बन सकता है, इसके लिए बुनियादी शर्त है कि दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले बच्चे को दूध पिलाया जाए।

महरम का बयान

(यानी जिन औरतों से निकाह करना हराम है)

सूरह निसा की 23वीं और 24वीं आयात में अल्लाह तआला ने उन औरतों का जिक्र फरमाया है जिनके साथ निकाह करना हराम है, वह नीचे लिखे जा रहे हैं।

नसबी रिश्ते

- मा (हकीकी मां या सौतेली मां, इसी तरह दादी या नानी)
- बेटी (इसी तरह पोती या नवासी)
- बहन (हकीकी बहन, मां शरीक बहन, बाप शरीक बहन)
- फूफी (वालिद की बहन खाह सगी हो या सौतेली)
- खाला (मां की बहन खाह सगी हो या सौतेली)
- भतीजी (भाई की बेटी खाह सगी हो या सौतेली)
- भाजी (बहन की बेटी खाह सगी हो या सौतेली)

रिज़ाई रिश्ते

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिन औरतों से नसब की वजह से निकाह नहीं किया जा सकता है रिज़ाअत (दूध पीने) की वजह से भी उन्हीं रिश्तों में निकाह नहीं किया जा सकता है। (बुखारी व मुस्लिम) गरज़ रिज़ाई मां, रिज़ाई बेटी, रिज़ाई बहन, रिज़ाई फूफी, रिज़ाई खाला, रिज़ाई भतीजी और रिज़ाई भांजी से निकाह नहीं हो सकता है, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान की रौशनी में रिज़ाअत से

हरमत उसी सूरत में होगी जबकि दूध छुड़ाने की मुद्दत से पहले दूध पिलाया गया हो।

इज़देवाजी रिशते

- बीवी की मां (सास)
- बीवी की पहले शौहर से बेटा, लेकिन ज़रूरी है कि बीवी से सोहबत कर चुका हो।
- बेटे की बीवी (बहू) (यानी अगर बेटा अपनी बीवी को तलाक़ दे दे या मर जाए तो बाप बेटे की बीवी से शादी नहीं कर सकता)
- दो बहनों को एक साथ निकाह में रखना (इसी तरह खाला और उसकी भांजी, फूफी और उसकी भतीजी को एक साथ निकाह में रखना मना है)

आम रिशते

- किसी दूसरे शख्स की बीवी (अल्लाह तआला के इस वाज़ेह हुकुम की वजह से एक औरत बयक वक़्त एक से ज़ायद शादी नहीं कर सकती है)

वज़ाहत

- 1) बीवी के इंतिकाल या तलाक़ के बाद बीवी की बहन (साली), उसकी खाला, उसकी भांजी, उसकी फूफी या उसकी भतीजी से निकाह किया जा सकता है।
- 2) भाई, मामू या चाचा के इंतिकाल या उनके तलाक़ देने के बाद भाभी, मुमानी और चाची के साथ निकाह किया जा सकता है।

औरत का जिन मर्दों से परदा नहीं है और उनके साथ सफर किया जा सकता है वह नीचे लिखे जा रहे हैं जैसा कि सूरह नूर की आयत 31 और सूरह अहज़ाब की आयत 55 में मज़कूर है।

नसबी रिश्ते

- बाप(इसी तरह दादा या नाना)
- बेटा (इसी तरह पोता या नवासा)
- भाई (हकीकी भाई, मां शरीक भाई, बाप शरीक भाई)
- चाचा (वालिद के भाई चाहे सगे हों या सैतेले)
- मामू (वालिदा के भाई चाहे सगे हों या सैतेले)
- भतीजा (भाई का बेटा चाहे सगा हो या सौतेला)
- भाजा (बहन का बेटा चाहे सगा हो या सौतेला)

रिज़ाई रिश्ते

रिज़ाई बाप, रिज़ाई बेटा, रिज़ाई भाई, रिज़ाई चाचा, रिज़ाई मामू, रिज़ाई भतीजा और रिज़ाई भांजा।

इज़देवाजी रिश्ते

- शौहर
- शौहर के वालिद या दादा
- शौहर की पहली/दूसरी बीवी का बेटा
- दामाद

(वज़ाहत)

1) खूनी या रिज़ाई या इज़देवाजी रिश्ते न होने की वजह से औरत को अपने बहनोई, देवर या जेठ, खालू या फूफा से शरई एतेबार से परदा करना चाहिए और उनके साथ सफर भी नहीं करना चाहिए। गरज़ ये कि मर्द अपनी साली या भाभी के साथ सफर नहीं कर सकता है।

2) औरतों को अपने चचाज़ाद, फूफीज़ाद, खालाज़ाद और मामूज़ाद भाई से परदा करना चाहिए और उनके साथ सफर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि औरत की अपने चचाज़ाद, फूफीज़ाद, खालाज़ाद और मामूज़ाद भाई से शादी हो सकती है।

इल्मे मीरास और उसके मसाइल

लुगवी मानी: मीरास की जमा मवारीस आती है जिसके मानी “तरका” हैं, यानी वह माल व जायदाद जो मय्यत छोड़ कर मरे। इल्मे मीरास को इल्मे फरायज़ भी कहा जाता है, फरायज़ फरीज़ा की जमा है जो फर्ज़ से लिया गया है जिसके मानी “मुत्ताअय्यन” हैं, क्योंकि वारिसों के हिस्से शरीअते इस्लामिया की जानिब से मुत्ताअय्यन हैं इसलिए इसको इल्मे फरायज़ भी कहते हैं।

इस्तेलाही मानी: इस इल्म के ज़रिये यह जाना जाता है कि किसी शख्स के इंतिकाल के बाद उसका वारिस कौन बनेगा और कौन नहीं, नीज़ वारिसीन को कितना कितना हिस्सा मिलेगा।

कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर मीरास के अहकाम बयान किए गए हैं, लेकिन तीन आयात (सूह निसा 11, 12 व 127) में इख्तेसार के साथ बेशतर अहकाम जमा कर दिए गए हैं। मीरास के मसाइल में फुक्कहा व उलमा का इख्तेलाफ बहुत कम है।

इल्मे मीरास की अहमियत: दीने इस्लाम में इस इल्म की बहुत ज़्यादा अहमियत है, चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस इल्म को पढ़ने पढ़ाने की बहुत दफा तर्गीब दी है।

— नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया इल्मे फरायज़ सीखो और लोगों को सिखाओ, क्योंकि यह निस्फ (आधा) इल्म है, इसके मसाइल लोग जल्दी भूल जाते हैं, यह पहला इल्म है जो मेरी उम्मत से उठा लिया जाएगा। (इब्ने माजा)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इल्मे फरायज़ को निस्फ इल्म करार दिया है। इसकी मुख्तलिफ तौजिहात ज़िक्र की गई हैं जिनमें से एक यह है कि इंसान की दो हालतें होती हैं, एक ज़िन्दगी की हालत और दूसरी मरने की हालत। इल्मे मीरास में ज़्यादातर मसाइल मौत की हालत के मुतअल्लिक होते हैं, जबकि दूसरे उलूम में ज़िन्दगी के मसाइल से बहस होती है, लिहाज़ा इस मानी के सामने रख कर इल्मे मीरास निस्फ इल्म हुआ।

— नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुझे भी एक दिन दुनिया से रूख्सत होना है, इल्म उठा लिया जाएगा और फितने ज़ाहिर होंगे यहां तक कि मीरास के मामले में दोशख्स इख्तेलाफ करेंगे तो कोई शख्स उनके दरमियान फैसला करने वाला नहीं मिलेगा। (तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद)

— हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया मीरास के मसाइल को सीखा करो, क्योंकि यह तुम्हारे दीन का एक हिस्सा है। (अद्वारमी 2851)

— हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया जो शख्स कुरान करीम सीखे उसको चाहिए कि वह इल्मे मीरास को भी सीखे। (बैहकी)

इल्मे मीरास के तीन अहम हिस्से हैं

मुवर्स - वह मय्यत जिसका साज़ व सामान व जायदाद दूसरों की तरफ मुंतकिल हो रही है।

वारिस - वह शख्स जिसकी तरफ मय्यत का साज व सामान व जायदाद मुंतकिल हो रही है। वारिस की जमा वुरसा आती है।

मौरूस - तरका यानी वह जायदाद या साज व सामान जो मरने वाला छोड़ कर मरा है।

मय्यत के साज व सामान और जायदाद में चार हुक्क हैं

1) मय्यत के माल व जायदाद में सबसे पहले उसके कफन व दफन का इंतजाम किया जाए।

2) दूसरे नम्बर पर जो कर्ज़ मय्यत के ऊपर है उसको अदा किया जाए।

अल्लाह तआला ने अहमियत की वजह से कुरान करीम में वसीयत को कर्ज़ पर मुकद्दम किया है, लेकिन उम्मत का इजमा है कि हुकुम के एतेबार से कर्ज़ वसीयत पर मुकद्दम है, यानी अगर मय्यत के जिम्मे कर्ज़ हो तो सबसे पहले मय्यत के तरके में से वह अदा किया जाएगा, फिर वसीयत पूरी की जाएगी और उसके बाद मीरास तकसीम होगी।

अगर मय्यत ज़कात वाजिब होने के बावजूद ज़कात की अदाएंगी न कर सका या हज फर्ज़ होने के बावजूद हज की अदाएंगी न कर सका या बीवी का महर अभी तक अदा नहीं किया गया तो यह चीज़ें भी मय्यत के जिम्मे कर्ज़ की तरह हैं।

3) तीसरा हक़ यह है कि एक तिहाई हिस्से तक उसकी जाएज़ वसीयतों को नाफिज़ किया जाए।

वसीयत का क़ानून

शरीअते इस्लामिया में वसीयत का क़ानून बनाया गया ताकि क़ानूने मीरास की रू से जिन अज़ीज़ों को मीरास में हिस्सा नहीं पहुंच रहा है

और वह मदद के मुस्तहिक हैं मसलन कोई यतीम पोता या पोती मौजूद है या किसी बेटे की बेवा मुसीबत में है या कोई भाई या बहन या कोई दूसरा अजीज सहारे का मोहताज है तो वसीयत के जरिये उस शख्स की मदद की जाए। वसीयत करना और न करना दोनों अगरचे जाएज़ हैं, लेकिन बाज़ औकात में वसीयत करना अफज़ल व बेहतर है। वारिसों के लिए एक तिहाई जायदाद में वसीयत का नाफिज़ करना वाजिब है यानी अगर किसी शख्स के कफन दफन के अखराजात और कर्ज़ की अदाएगी के बाद 9 लाख रुपये की जायद बचती है तो 3 लाख तक वसीयत नाफिज़ करना वारिसीन के लिए ज़रूरी है। एक तिहाई से ज़्यादा वसीयत नाफिज़ करने और न करने में वारिसीन को इख्तियार है।

(नोट) किसी वारिस या तमाम वारिसीन को महरूम करने के लिए अगर कोई शख्स वसीयत करे तो यह गुनाहे कबीरा है जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने वारिस को मीरास से महरूम किया अल्लाह तआला क़यामत के दिन जन्नत से उसको (कुछ अरसे के लिए) महरूम रखेगा। (इब्ने माजा)

4) चौथा हक़ यह है कि बाक़ी साज़ व सामान और जायदाद को शरीअत के मुताबिक़ वारिसीन में तक़सीम कर दिया जाए। **“नसीबम मफ़ूज़ा”** (सूरह निसा 7) **“फरीज़तम मिनल्लाहि”** (सूरह निसा 11) **“वसीयतम मिनल्लाहि”** (सूरह निसा 12) **“तिलका हुदुदुल्लहि”** (सूरह निसा 13) से मालूम हुआ कि कुरान व सुन्नत में ज़िक्र किए गए हिस्सों के एतेबार से वारिसीन को मीरास तक़सीम करना वाजिब है।

वुरसा की तीन किसमें

1) **साहिबुल फज़** - वह वुरसा जो शरई एतेबार से ऐसा मुअय्यन हिस्सा हासिल करते हैं जिसमें कोई कमी या बेशी नहीं हो सकती है। ऐसे मुअय्यन हिस्से जो कुरान करीम में ज़िक्र किए गए हैं वह छः हैं: $1/2$, $1/4$, $1/8$, $2/3$, $1/3$, $1/6$

कुरान व सुन्नत में जिन हज़रात के हिस्से मुतअय्यन किए गए हैं वह यह हैं:

- बेटी (बेटी न होने की सूरत में में पोती)
- मां बाप (मां बाप न होने की सूरत में दादा दादी)
- शौहर
- बीवी
- भाई
- बहन

2) **असबा** - वह वुरसा जो मीरास में गैर मुअय्यन हिस्से के हकदार बनते हैं, यानी असहाबुल फरूज़ के हिस्सों की अदाएगी के बाद बाक़ी सारी जायदाद के मालिक बन जाते हैं, मसलन बेटा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कुरान व सुन्नत में जिन वुरसा के हिस्से मुतअय्यन किए गए हैं उनको देने के बाद जो बचेगा वह करीब तरीन रिशतेदार को दिया जाएगा। (बुखारी व मुस्लिम)

3) **ज़विल अरहाम** - वह रिशतेदार जो नम्बर 1 (साहिबुल फज़) और नम्बर 2 (असबा) में से कोई वारिस न होने पर मीरास में शेर होते हैं, जैसे चाचा, भतीजे और चचाज़ाद भाई वगैरह।

मीरास किस को मिलेगी?

तीन वजहों में से कोई एक वजह पाए जाने पर ही विरासत मिल सकती है।

1) खूनी रिश्तेदारी - यह दो इंसानों के दरमियान विलादत का रिश्ता है, अलबत्ता करीबी रिश्तेदार की मौजूदगी में दू के रिश्तेदारों को मीरास नहीं मिलेगी, मसलन मय्यत के भाई बहन उसी सूरत में मीरास में शरीक हो सकते हैं जबकि मय्यत की औलाद या वालिदैन में से कोई एक भी जिन्दा न हो। यह खूनी रिश्ते उसूल व फुरु व हवाशी पर मुशतमिल होते हैं। उख्ख (जैसे वालिदैन, दादा दादी वगैरह) और फुरु (जैसे औलाद, पोते पोती वगैरह) और हवाशी (जैसे भाई, बहन, भतीजे, भांजे, चाचा और चचाज़ाद भाई वगैरह)।

(वज़ाहत) सूरह निसा आयत 7 से यह बात मालूम होती है कि मीरास की तकसीम ज़रूरत के मेयार से नहीं बल्कि कराबत के मेयार से होती है, इस लिए ज़रूरी नहीं कि रिश्तेदारों में जो ज़्यादा हाजतमंद हो उसको मीरास का ज़्यादा मुस्तहिक समझा जाए, बल्कि जो मय्यत के साथ रिश्ते में ज़्यादा करीब होगा वह दूर के बनिसबत ज़्यादा मुस्तहिक होगा। गरज़ ये कि मीरास की तकसीम करीब से करीब तर के उसूल पर होती है चाहे मर्द हो या औरत, बालिग हो या नाबालिग।

2) निकाह - मियां बीवी एक दूसरे के मीरास में शरीक होते हैं।

3) गुलामियत से छुटकारा - इसका वज़ूद अब दुनिया में नहीं रहा, इस लिए मज़मून में इससे मुतअल्लिक कोई बहस नहीं की गई है।

शरीअते इस्लामिया ने औरतों और बच्चों के हुक्क की पूरी हिफाज़त की है और ज़मानए जाहिलीयत की रस्म व रिवाज के बरखिलाफ उन्हें भी मीरास में शामिल किया है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह निसा आयत 7) में ज़िक्र फरमाया है।

मर्दों में से यह रिश्तेदार वारिस बन सकते हैं

बेटा, पोता, बाप, दादा, भाई, भतीजा, चाचा, चाचज़ाद भाई, शौहर

औरतों में से यह रिश्तेदार वारिस बन सकते हैं

बेटी, पोती, मां, दादी, बहन, बीवी

(नोट) उसूल व फरू में तीसरी पुशत (मसलन पड़ दादा या पड़ पोता) या जिन रिश्तेदारों तक आम तौर विरासत की तकसीम की नौबत नहीं आती है उनके अहकाम यहां बयान नहीं किए गए हैं, तफ़्सीलात के लिए उलमा से रुजू फरमाएं।

शौहर और बीवी के हिस्से

शौहर और बीवी की विरासत में चार शकलें बनती हैं। (सूरह निसा 12)

— बीवी के इंतिकाल पर औलाद मौजूद न होने की सूरत में शौहर को $1/2$ मिलेगा।

— बीवी के इंतिकाल पर औलाद मौजूद होने की सूरत में शौहर को $1/4$ मिलेगा।

— शौहर के इंतिकाल पर औलाद मौजूद न होने की सूरत में बीवी को $1/4$ मिलेगा।

— शौहर के इंतिकाल पर औलाद मौजूद होने की सूरत में बीवी को $1/8$ मिलेगा।

(वज़ाहत) अगर एक से ज़्यादा बीवियां हैं तो यही मुतअय्यन हिस्सा ($1/4$ या $1/8$) बड़जमाए उम्मत उनके दरमियान तकसीम किया जाएगा।

बाप का हिस्सा

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसके वालिद ज़िन्दा हैं और मय्यत का बेटा या पोता भी मौजूद है तो मय्यत के वालिद को $1/6$ मिलेगा।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसके वालिद ज़िन्दा हैं अलबत्ता मय्यत की कोई भी औलाद या औलाद की औलाद ज़िन्दा नहीं है तो मय्यत के वालिद असबा में शुमार होंगे, यानी मुअय्यन हिस्सों की अदाएगी के बाद बाकी सारी जायदाद मय्यत के वालिद की हो जाएगी।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसके वालिद ज़िन्दा हैं और मय्यत की एक या ज़्यादा बेटी या पोती ज़िन्दा है अलबत्ता मय्यत का कोई एक बेटा या पोता ज़िन्दा नहीं है तो मय्यत के वालिद को $1/6$ मिलेगा। नीज़ मय्यत के वालिद असबा में भी होंगे, यानी मुअय्यन हिस्सों की अदाएगी के बाद बाकी सब मय्यत के वालिद का होगा।

मां का हिस्सा

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसकी मां ज़िन्दा है अलबत्ता मय्यत की कोई औलाद नीज़ मय्यत का कोई भाई बहन ज़िन्दा नहीं है तो मय्यत की मां को $1/3$ मिलेगा।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसकी मां ज़िन्दा हैं और मय्यत की औलाद में से कोई एक या मय्यत के दो या दो से ज़्यादा भाई मौजूद हैं तो मय्यत की मां को $1/6$ मिलेगा।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसकी मां ज़िन्दा है, अलबत्ता मय्यत की कोई औलाद नीज़ मय्यत का कोई भाई बहन ज़िन्दा नहीं है, लेकिन मय्यत की बीवी ज़िन्दा है तो सबसे पहले बीवी को $1/4$ मिलेगा। हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसी तरह फैसला फरमाया था।

औलाद के हिस्से

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसके एक या ज़्यादा बेटे ज़िन्दा हैं लेकिन कोई बेटी ज़िन्दा नहीं है तो ज़विल फुरुज़ में से जो शख्स (मसलन मय्यत के वालिद या वालिदा या शौहर या बीवी) ज़िन्दा हैं उनके हिस्से अदा करने के बाद बाकी सारी जायदद बेटों में बराबर तकसीम की जाएगी।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त उसके बेटे और बेटियां ज़िन्दा हैं तो ज़विल फुरुज़ में से जो शख्स (मसलन मय्यत के वालिद या वालिदा या शौहर या बीवी) ज़िन्दा हैं उनके हिस्से अदा करने के बाद बाकी सारी जायदाद बेटों और बेटियों में कुलान करीम के

उसूल (लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर) की बुनियाद तकसीम की जाएगी।

— अगर किसी शख्स की मौत के वक़्त सिर्फ उसकी बेटियां ज़िन्दा हैं बेटे ज़िन्दा नहीं हैं तो एक बेटी की सूरत में उसे 1/2 मिलेगा और दो या दो से ज़्यादा बेटियां होने की सूरत में उन्हें 2/3 मिलेगा।

(वज़ाहत) अल्लाह तआला ने सूरह निसा आयत 11 में मीरास का एक अहम उसूल बयान किया है “अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी औलाद के मुतअल्लिक हुकुम करता है कि एक मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है।”

शरीअते इस्लामिया में मर्द पर सारी मआशी जिम्मेदारियां आयद की हैं, चुनांचे बीवी और बच्चों के पूरे अखराजात औरत के बजाए मर्द के ज़िम्मे रखे हैं यहां तक कि औरत के ज़िम्मे ख़ुद उसका खर्च भी नहीं रखा, शादी से पहले वालिद और शादी के बाद शौहर के ज़िम्मे औरत का खर्च रखा गया है। इस लिए मर्द का हिस्सा औरत से दोगुना रखा गया है।

अल्लाह तआला ने लड़कियों को मीरास दिलाने का इस कदर एहतेमाम किया है कि हिस्सा को असल करार दे कर उसके एतेबार से लड़कों का हिस्सा बताया कि लड़को हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है।

भाई बहन के हिस्से

मय्यत के बहन भाई को इसी सूरत में मीरास मिलती है जबकि मय्यत के वालिदैन और औलाद में से कोई भी ज़िन्दा न हो। आम

तौर पर ऐसा कम होता है इस लिए भाई बहन के हिस्से का तज़केरा यहां नहीं किया है। तफसीलात के लिए उलमा से रुजू फरमाएं।

खुसूसी हिदायत: मीरात की तकसीम के वक़्त तमाम रिश्तेदारों की अखलाकी ज़िम्मेदारी है कि अगर मय्यत का कोई रिश्ता तंग दस्त है और ज़ाब्तए शरई से मीरास में उसका कोई हिस्सा नहीं है फिरभी उसको कुछ दे दें जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह निसा आयत 8 एवं 9 में इसकी तर्गीब दी है। 10 वीं आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं हकीक़त में वह अपने पेट आग से भरते हैं और वह जहन्नम की भड़कती हुई आग में झोंके जाएंगे।

तम्बीह: मीरास वह माल है जो इंसान मरते वक़्त छोड़ कर जाता है और उसमें सारे वुरसा अपने अपने हिस्से के मुताबिक़ हक़दार होते हैं। इंतिकाल के फौरन बाद मरने वाले की सारी जायदाद बुसा में मुंतकिल हो जाती है। लिहाज़ा अगर किसी शख्स ने मीरास कुरान व सुन्नत के मुताबिक़ तकसीम नहीं की तो वह जुल्म करने वाला होगा। अल्लाह तआला! हमें तकसीम मीरास की काताहियों से बच्चे वाला बनाए और तमाम वारिसों को कुरान व सुन्नत के मुताबिक़ मीरास तकसीम करने वाला बनाए।

नोट - इंसान अपनी ज़िन्दगी में अपने माल व सामान व जायदाद का खुद मालिक है। अपनी आम सेहत की ज़िन्दगी में अपनी औलाद में हत्तल इमकान बराबरी करते हुए जिस तरह चाहे अपनी जायदाद

तक़सीम कर सकता है अलबत्ता मौत के बाद सिर्फ और सिर्फ सुन्न व सुन्नत में मज़क़ूरा मीरास के तरीक़े से ही तरका तक़सीम किया जाएगा, क्योंकि मरते ही तरका के मालिक शरीअते इस्लामिया के हुसूल के मुताबिक़ बदल जाते हैं।

नोट - यहां मीरास के अहम अहम मसाइल इख़्तिसार के साथ ज़िक़्र किए गए हैं, तफ़सीलात के लिए उलमाए किराम से रूजू फरमाएं।

तीन तलाक़ का मसअला

हाल ही में इंटरनेट के एक ग्रुप पर तलाक़ के मुतअल्लिक एक फतवे पर मुख्तलिफ हज़रात के तअस्सुरात पढ़ने को मिले। पढ़ने के बाद महसूस हुआ कि बाज़ हज़रात तलाक़ के मानी तक नहीं जानते, लेकिन तलाक़ के मसाइल पर अपनी राय लिखने को दीनी फरीज़ा समझते हैं।

मेरे अज़ीज़ दोस्तो!

आप किसी मसअले पर किसी आलिम/मुफ्ती की राय से इख्तेलाफ कर सकते हैं मगर कु़रान व हदीस की रौशनी में मसअले से वाक़फियत के बेगैर किसी फतवा/मसअला पर अपनी राय ज़ाहिर करना और उसको बिला वजह मौज़ूए बहस बनाना जाएज़ नहीं है। अगर मसअला आपकी समझ में नहीं आ रहा है तो आप मोतबर उलमा से पूछें, मुमकिन है कि कु़रान व हदीस की रौशनी में उनकी राय भी वही हो। अगर मसअला उलमा के दरमियान मुख्तलफ फीह है तो आप कु़रान व हदीस की रौशनी में अल्लाह से डरते हुए आलिम/मुफ्ती जो बात सही समझेगा उसको लिख देगा चाहे आप उससे मुत्तफिक हों या नहीं।

मौज़ूए बहस मसअला (तलाक़) पर गुफ्तगू करने से पहले निकाह की हकीकत को समझें कि निकाह की हैसियत अगर एक तरफ आपसी मामला व मुआहिदा की है तो दूसरी तरफ यह सुन्नत व इबादत की हैसियत भी रखता है। शरीअत की निगाह में यह एक बुहस सही संजीदा और काबिले एहतेराम मामला है जो इसलिए किया जाता है

कि बाकी रहे, यहां तक कि मौत ही मियां बीवी को एक दूसरे से जुदा करे। यह एक ऐसा काबिले कदर रिश्ता है जो तकमीले इंसानियत का ज़रिया और रज़ाए इलाही व इत्तिबाए सुन्नत का वसीला है और यह एक ऐसा मामला है जिसके टूटने से न सिर्फ मियां बीवी मुतअस्मिर होते हैं बल्कि इससे पूरे घरेलू निज़ाम की चुलें हिल जाती हैं और बसाओकात खानदानों में झगड़े तक की नौबत आ जाती है। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला की हलाल करदा चीजों में तलाक़ से ज़्यादा घिनावनी और कोई चीज नहीं है। (अबू दाउद) इसी लिए उलमाए किराम ने फरमाया कि तलाक़ का लफज़ कभी मज़ाक में भी ज़बान पर न लाया जाए।

इसी लिए जो असबाब इस बाबरकत और मुकद्दस रिश्ते को तोड़ने का ज़रिया बन सकते हैं उन्हें रास्ते से हटाने का शरीअत ने रूपा इत्तिज़ाम किया है, चुनांचे मियां बीवी में इख्तेलाफ की सूरत में सबसे पहले एक दूसरे को समझाने की कोशिश की जाए, फिर डांट डपट की जाए और इससे भी काम न चले और बात बढ़ जाए तो दोनों खानदान के चंद अफराद मिल कर मामला तैय करने की कोशिश करें। लेकिन बसाओकात हालात इस हद तक बिगड़ जाते हैं कि इस्लाहे हाल की यह सारी कोशिशें बेसू हो जाती हैं और रिश्ता इज़देवाज से मतलूब फवायद हासिल होने के बजाए मियां बीवी का आपस में मिल कर रहना एक अज़ाब बन जाता है। ऐसी नाबुख़ीर हालत में कभी कभी इज़देवाजी ज़िन्दगी का खत्म कर देना ही न सिर्फ दोनों के लिए बल्कि दोनों खानदानों के लिए बाइसे राह होता है, इसलिए शरीअते इस्लामिया ने तलाक़ और फस्खे निकाह (खुलअ)

का क़ानून बनाया है, जिस में तलाक़ का इख़्तियार सिर्फ़ मर्द को दिया गया है, क्योंकि इसमें आतदन व तबअन औरत के मुकाबले फ़िक्र व तदब्बुर और बर्दाशत व तहम्मुल की कुव्वत ज़्यादा होती है जैसा कि कुरान की आयत “वलिर रिजालि अलैहिन्न दरजह” (सूरह बकरह 238) और “अर रिजालु क़व्वमूना अलन निसा” (सूरह निसा) में ज़िक्र किया गया है। लेकिन औरत को भी इस हक़ से यकसर महरूम नहीं किया गया, बल्कि उसे भी यह हक़ दिया गया है कि वह शरई अदालत में अपना मौक़िफ पेश करके क़ानून के मुताबिक़ तलाक़ हासिल कर सकती है जिसको ख़ुलअ कहा जाता है।

मर्द को तलाक़ का इख़्तियार दे कर उसे बिल्कुल आजाद नहीं छोड़ दिया गया बल्कि उसे ताकीदी हिदायत दी गई कि किसी वक़्ती व हंगामी नागवारी में इस हक़ का इस्तेमाल न करे, नीज़ हैज़ के ज़माने में या ऐसे पाकी में जिसमें हमबिस्तरी हो चुकी है तलाक़ न दे, क्योंकि इस सूरत में औरत की इद्दत खाह मखाह लम्बी हो सकती है, बल्कि इस हक़ के इस्तेमाल का बेहतर तरीक़ा यह है कि जिस पाकी के दिनों हमबिस्तरी नहीं की गई है एक तलाक़ दे कर रुक जाए, इद्दत पूरी हो जाने पर रिश्तए निकाह खुद ही ख़त्म हो जाएगा, दूसरी या तीसरी तलाक़ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और अगर दूसरी या तीसरी तलाक़ देनी ही है तो अलग अलग पाकी की हालत में दी जाए। फिर मामलए निकाह को तोड़ने में यह लचक रखी गई है कि दौराने इद्दत अगर मर्द अपनी तलाक़ से रुजू कर ले तो पहले वाला निकाह बाक़ी रहेगा, नीज़ औरत को नुक़सान से बचाने की गरज़ से हक़े रजअत को भी दो तलाकों तक महदूद कर दिया गया, ताकि कोई शौहर महज़ औरत को सताने के लिए ऐसा न करे कि हमेशा

तलाक़ देता रहे और रजअत करके कैदे निकाह में उसे कैद रखेजैसा कि सूरह बक्रह की आयात नाज़िल होने से पहले बाज़ लोग किया करते थे, बल्कि शौहर को पाबन्द कर दिया गया कि रजअत का इख्तियार सिर्फ़ दो तलाकों तक ही है, तीन तलाकों की सूत में यह इख्तियार खत्म हो जाएगा, बल्कि मियां बीवी अगर आपसी रज़ामंदी से भी दोबारा निकाह करना चाहें तो एक खास सूरा के अलावा यह निकाह दुरुस्त और हलाल होगा। सूरह बक्रह आयत 230 में यही खास सूरह बयान की गई है जिसका हासिल यह है कि अगर किसी शख्स ने तीसरी तलाक़ दे दी तो दोनों मियां बीवी रिश्ते निकाह से मुंसलिक होना भी चाहें तो वह ऐसा नहीं कर सकते यहां तक कियह औरत तलाक़ की इद्दत गुज़ारने के बाद दूसरे मर्द से निकाह करे, दूसरे शौहर के साथ रहे, दोनों एक दूसरे से लुत्फ़ अंदोज हों। फिर अगर इत्तेफाक़ से यह दूसरा शौहर भी तलाक़ दे दे या वफात पा जाए तो उसकी इद्दत पूरी करने के बाद पहले शौहर से निकाह हो सकता है। यही वह जाएज़ हलाला है जिसका ज़िक्र किताबों में मिलता है।

अब मौजूए बहस मसअला की तरफ़ रुजू करता हूं कि अगर किसी शख्स ने हिमाक़त और जिहालत का सबूत देते हुए हलाल तलाक़ के बेहतर तरीक़ा को छोड़ कर ग़ैर मशरू तौर पर तलाक़ दे दी, मसलन तीन तलाक़ें नापाकी के दिनों में दे दीं, या एक ही ठुहर में अलग अलग वक़्त वक़्त में तीन तलाक़ें दे दीं या अलग अलग तीन तल्ल़ाक़ ऐसे तीन पाकी के दिनों में दीं जिसमें कोई सोहबत की हो या एक ही वक़्त में तीन तलाक़ें ऐसे पाकी के दिनों में दीं जिसमौई क

सोहबत की हो या एक ही वक़्त में तीन तलाक़ दे दीं तो उसका क्या असर होगा?

हलाल तलाक़ के बेहतर तरीका को छोड़ कर मज़क़ूर बाला तमाम ग़ैर मशरू सूरतों में तीन ही तलाक़ पड़ने पर तमाम उलमाए किराम मुत्तफ़िक़ हैं सिवाए एक सूरत के कि अगर कोई शख्स एक मजलिस में तीन तलाक़ दे दे तो क्या एक वाक़े होगी या तीन। जमहूर उलमा की राय के मुताबिक़ तीन ही तलाक़ वाक़े होगी। फ़ुक़हां सहाबए किराम हज़रत उमर फारूक़, हज़रत उसमान, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हुम वग़ैरह वग़ैरह तीन ही तलाक़ पड़ने के कायल थे, नीज़ चारों इमाम (इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हमबल रहमतुल्लाह अलैहिम) की मुत्तफ़िक़ अलैह राय भी यही है कि एक मजलिस में तीन तलाक़ देने पर तीन ही वक़े होंगी जैसा कि 1393 हिजरी में सउदी अरब के बड़े बड़े उलमाए किराम की अकसरियत ने बहस व मुबाहसा के बाद कुरान व हदीस की रौशनी में यही फैसला किया कि एक वक़्त में दी गई तीन तलाक़ें तीन ही शुआर होंगी। यह पूरी बहस और मुफ़स्सल तजवीज़ (मजल्लतुल बहूस अल इस्लामिया 1397 हिजरी) में 150 सफ़हात में छपी हुई है जो इस मौजू पर एक अहम इल्मी दस्तावेज़ की हैसियत रखती है। इस फैसले में सउदी अरब के जो अकाबिर उलमा शक़े रहे उनके नाम यह हैं। (1) शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ (2) शैख अब्दुल्लाह बिन हमीद (3) शैख मोहम्मद अल अमीन अश शंकीती (4) शैख सुलैमान बिन उबैद (5) शैख अब्दुल्लाह खय्यात (6) शैख

मोहम्मद अल हरकान (7) शैख इब्राहिम बिन मोहम्मद आल शैख (8) शैख अब्दुर रज़्ज़ाक अफीफी (9) शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन सालेह (10) शैख सालेह बिन गसून (11) शैख मोहम्मद बिन जुबैर (12) शैख अब्दुल मजीद हसन (13) शैख राशिद बिन खुनैन (14) शैख सालेह बिन लहीदान (15) शैख मिहज़ार अक्रील (16) शैख अब्दुल्लाह बिन गदयान (17) शैख अब्दुल्लाह बिन मनी।

मज़मून के आखिर में भी यह फैसला मज़कू है। सउदी अरब के अकाबिर उलमा ने कुरान व हदीस की रौशनी में सहाब किराम, ताबेईन और तबे ताबेईन के अक़वाल को सामने रख कर यही फैसला फरमाया कि एक मजलिस में तीन तलाक़ देने पर तीन ही वाक़े होंगी। उलमाए किराम की दूसरी जमाअत ने जिन दो अहादीस को बुनियाद बना कर एक मजलिस में तीन तलाक़ देने पर एक वाक़े होने का फैसला फरमाया है सउदी अरब के अकाबिर उलमा ने उन अहादीस को गैर मोतबर करार दिया है। नीज़ हिन्द, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान के तक़रीबन तमाम उलमाए किराम की भी यही राय है।

लिहाज़ा मालूम हुआ कि कुरान व हदीस की रौशनी में 1400 साल से उम्मत मुस्लिमा (90.95%) इसी बात पर मुत्तफ़िक़ है कि एक मजलिस की तीन तलाक़ तीन ही शुमार की जाएंगी, लिहाज़ा अगर किसी शख्स ने एक मजलिस में तीन तलाक़ दें दीं तो इख़्तेयार रजअत ख़त्म हो जाएगा नीज़ मियां बीवी अगर आपसी रज़ामंदी से भी दोबारा निकाह करना चाहें तो यह निकाह दुरुस्त और हलाल नहीं होगा यहां तक कि औरत तलाक़ की इद्दत गुज़ारने के बाद दूसरे मर्द से निकाह करे, दूसरे शौहर के साथ रहे, दोनों एक दूसरे से लुल्फ़

अंदोज हों, फिर अगर इत्तेफाक से यह दूसरा शौहर भी तलाक दे दे या वफात पा जाए तो उसकी इद्दत पूरी करने के बाद पहले शौहर से निकाह हो सकता है। यही वह जाएज़ हलाला है जिसका ज़िक्र किताबों में मिलता है, जिसका ज़िक्र कुक़ान करीम के सूरह बकरह आयात 230 में आया है।

(नोट) दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक मजलिस में तीन तलाक देने पर बेशुमार मवाक़े पर बाकायदा तौर पर तीन ही तलाक़ का फैसला सादिर किया जाता रहा, किसी सहाबी का कोई इख्तेलाफ़ हत्ताकि किसी ज़ईफ़ रिवायत से भी नहीं मिलता। इस बात को पूरी उम्मत मुस्लिमा मानती है। लिहाज़ा कुरान व हदीस की रौशनी में जमहूर फ़ुक़हा खास कर (इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हमबल रहमतुल्लाह अलैहिम) और उनके तमाम शागिदों शागिदों की मुत्तफ़क़ अलैह राय भी यही है कि एक मजलिस में तीन तलाक़ देने पर तीन ही वाक़े होंगी।

आखिर मैं तमाम हज़रात से खुसूसी दरखास्त करता हूँ कि मसाइल से वाक़फ़ियत के बेग़ैर बिला वजह ईमेल भेज कर लोगों में अंदेशा पैदा न करें। उलमाए किराम के मुस्तअल्लिक कुछ लिखने से पहले कुरान करीम के मुतअल्लिक अल्लाह तआला के फरमान का बखूबी मुतालआ फरमाएं “अल्लाह तआला के बन्दों में उलमाए किराम ही सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला से डरते हैं।” (सूरह फातिर 28) दूसरी दरखास्त यह है कि इस मौजू पर अगर कोई सवाल है तो ग्रुप पर भेजने के बजाए किसी आलिम से रुजू फरमाएं।

++++++

सउदी अरब की मजलिसे किबारे उलमा का फैसला तीन तलाक़ तलाक़ देने से तीन ही तलाक़ पड़ती है

इब्तेदाइया

वह फुरूई और इख्तिलाफी मसाइल जिन पर इसरार व तशद्दुद को हमारे मुल्क के गैर मुकल्लिदीन ने अपना शेआर बना रखा है उनमें से एक मसअला तीन तलाक़ के एक होने का है। उन्हें इसरार है कि एक मजलिस में दी गई तीन तलाक़ एक ही होती है, यह मसअला आज कल फिरका परस्त और मुस्लिम दुश्मन अनासिर के हाथों में कुछ इस तरह पहुंच गया है कि उन्होंने इसको मुस्लिम परसनल ला में तहरीफ व तरमीम के लिए नुक्तए आगाज़ समझ लिया और उनवान यह बनाया गया कि इसके ज़रिया से मुस्लिम मुआशरे की इस्लाह हो सकेगी, फिर इसी बुनियाद पर यह मशवरा दिया जाने लगा कि जब कदीम फतवा से इंहिराफ करके तलाक़ के मसअला में नया रास्ता इख्तियार किया जा सकता है तो क्यों न दूसरे मसाइल पर भी गौर किया जाए। हद तो यह है कि इस खालिस इल्मी व फिक़ही मसअले को अखबारात ने बाज़ीचए अतफाल बना दिया है, हकीकत यह है कि यह एक फितना है।

सउदी अरब के बड़े बड़े उलमा ने अपने एक इजलास में मौज़ के तमाम गोशों पर बहस व मुनाक़शा करके फैसला किया है कि एक लफ़्ज़ से दी गई तीन तलाक़ तीन ही होती है, यह बहस व मुनाक़शा और करारदाद रियाज़ के मजल्ला “अल बहुसूल इस्लामिया” जिल्द 1 के तीसरे शुमारे में शाये हुई हैं, इस बहस और करारदाद का तरजुमा अब से चंद साल पहले मुहद्दिसे जलील अबुल मआसिर हज़रत

मौलाना हबीबुर रहमान आज़मी के ईमा पर (अल मुजम्मअ अल इल्मी मऊ) की जानिब से शाये हुआ था, चूंकि गैर मुकल्लिदीन सउदी अरब को अपना हम मसलक समझते हैं और अवामी सतह पर उनको बतौर हुज्जत पेश करते हैं, नीज़ इस्लाम दुशमन अनासिर भी बाज़ मसाइल में मुस्लिम मुमालिक का हवाला पेश करते हैं, इसलिए मौजूदा हालात की नज़ाकत के पेशे नज़र इसे दोबारा शाये किया जाता है। खुदा करे यह फितना ठंडा हो।

मुदीरुल मुजम्मअ अल इल्मी

मुखालफीन का नुक्ता-ए-नज़र

मुखालफीन की राय में बयक लफ़्ज़ तीन तलाक़ देने से एक वाक़े होती है, सही रिवायत में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहुअन्हु का यही क़ौल मरवी है और सहाबए किराम में हज़रत जुबैर, इब्ने औफ, अली बिन अबी तालिब, अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हुम और ताबेईन में इकरमा व ताऊस वगैरह ने इसी पर फतवा दिया है। और इनके बाद मोहम्मद बिन इसहाक, फलास, हारिस अकली, इब्ने तैमिया, इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरह ने भी इसके मुवाफ़िक़ फतवा दिया है। अल्लामा इब्नुल क़य्यिम ने इगासतुल लुहफान में निहायत सफ़ाई के साथ यह लिखा है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के सिवा और किसी सहाबी से इस क़ौल की सही नक़ल हमको मालूम नहीं हुई। (इगासा 179/बहवाला इलाम मरफ़ुआ/30) उनके दलाइल नीचे मौजूद हैं।

1) “तलाक़ दो मरतबा है फिर ख्वाह रख लेना कायदे के मुवाफ़िक़ ख्वाह छोड़ देना खुश उनवानी के साथ।” (सूरह बक्रह 229) आयत

की तौजीह यह है कि मशरू तलाक़ जिसमें शौहर का इख्तियार ब़की रहता है, चाहे तो बीवी से रजअत करे या बिला रजअत उसे छोड़ दे यहां तक कि इद्दत पूरी हो जाए और बीवी शौहर से जुदा हो जाए वह दो बार है। चाहे हर मरतबा एक तलाक़ दे या बयक लफ़्ज़ तीन तलाक़ दे, इसलिए कि अल्लाह तआला ने “दो मरतबा” कहा “दो तलाक़” नहीं कहा है। इसके बाद अगली आयत में फरमाया फिर अगर तलाक़ दे दे औरत को तो फिर वह उसके लिए हलाल न रहेगी उसके बाद यहा तक कि वह उसके सिवा एक और शौहर के साथ निकाह कर ले।” (सूरह बकरह 230)

इस आयत से यह मालूम हुआ कि तीसरी मरतबा बीवी को तलाक़ देने से वह हराम हो जाती है, चाहे तीसरी मरतबा एक तलाक़ दी हो या बयक लफ़्ज़ तीन तलाक़ दी हो। इस तकरीर से मालूम हुआ कि मुतफरिक् तौर पर तीन मरतबा तलाक़ देने की मशरूइयत हुई, लिहाज़ा एक मरतबा में तीन तलाक़ देना एक कहलाएगा और वह एक समझा जाएगा।

2) इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी सही में बतरीके ताऊस इब्ने अब्बास से रिवायत किया है “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहद और अबू बकर की खिलाफत और अहदे फारूकी के इब्तिदाई दो साल में तीन तलाक़ एक होती थी, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया लोगों ने एक ऐसे मामला में जिसमें मोहलत थी उजलत से काम लेना शुरू कर दिया है, अगर हम इसे यानी तीन तलाक़ को नाफिज़ कर देते तो अच्छा होता, पस इसे नाफिज़ कर दिया।” मुस्लिम में इब्ने अब्बास की एक दूसरी रिवायत में है कि “अबुस सहबा ने हज़रत इब्ने अब्बास से पूछा क्या

आपको मालूम नहीं कि अहदे नबवी और अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी के इब्तिदा में तीन तलाक़ एक थी। हज़रत इब्ने अब्बासने फरमाया कि हां, लेकिन जब लोगों ने बकसरत तलाक़ देना शुरू किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीनों का नाफिज़ कर दिया।”

यह हदीस बयक लफ़्ज़ तीन तलाक़ के एक होने पर वज़ाहत के साथ दलालत करती है और यह हदीस मंसूख नहीं है, क्योंकि अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी के इब्तिदाई दो साल में इस हदीस पर बराबर अमल जारी रहा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन तलाक़ नाफिज़ करने की वजह यह बयान की है कि लोगों ने इसमें उजलत से काम लेना शुरू कर दिया है। उन्होंने नस्ख का दावा नहीं किया, नीज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन तलाक़ नाफिज़ करने में सहाबए किराम से मशवरा लिया और किसी ऐसी हदीसके छोड़ने में जिसका नस्ख हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हो सहाबए किराम से मशवरा नहीं करते।

मुखालफीन कहते हैं कि हदीस इब्ने अब्बास के जो जवाबात दिए गए हैं वह या तो षतकल्लुफ़ तावील है या बिना दलील लफ़्ज़ को खिलाफ़े ज़ाहिर पर हमल करना है या शुजूज़ व इज़तिराब और ताऊस के ज़ईफ़ होने का ताना है, लेकिन इमाम मुस्लिम ने जब इस हदीस को अपनी सही में रिवायत किया है तो यह ताना नाकबिले तसलीम है। इमाम मुस्लिम ने यह शर्त रखी है कि वह अपनी किताब में सिर्फ सही हदीस ही रिवायत करेंगे और फिर इस हिसाब को मतऊन करने वाले इसी हदीस के आखिरी हिस्से को अपने कौल की हुज्जत बनाते हैं और यह कैसे हो सकता है कि हदीस का

आखिरी हिस्सा काबिले क़बूल हुज्जत हो और उसका इब्तिदाई हिस्सा इज़तिराब और रावी के जर्इफ की वजह से नाकाबिले हुज्जत हो और इससे भी ज़्यादा बर्इद बात यह है कि अहदे नबवी में तीन तल्क के एक होने पर अमल जारी रहा हो, लेकिन हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसकी जानकारी न रही हो जबकि कुरान करीम नाज़िल हो रहा था, अभी वही का सिलसिला बराबर जारी था और यह भी नहीं हो सकता कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने तक पूरी उम्मत एक खता पर अमल करती रही हो। इन्हीं फुसफुसी बातों में एक एक यह भी है कि हज़रत इब्ने अब्बास के फतवे को उनकी हदीस का मुआरिज़ ठहराया जाए, उलमाए हदीस और जमहूर फुक्हा के नज़दीक बशर्ते सेहत रावी की रिवायत ही का एतेबार होता है। इस के खिलाफ उसकी राय या फतवा का एतेबार नहीं होता। यह कायदा उन लोगों का भी है जो एक लफ़्ज़ की तीन तलाक़ से तीन नाफिज करते हैं। लोगों ने अहदे फारूकी में एक लफ़्ज़ की तीन तलाक़ से तीन नाफिज होने पर इजमा का दावा किया है और हदीसे इब्ने अब्बास को इस इजमा का मुआरिज़ ठहराया है, हालांकि उन्हें मालूम है कि इस मसअला में सल्फ से खलफ तक और आज तक इख़तेलाफ चला आ रहा है।

हदीसे ज़ौजए रिफाआ कुर्जी से भी इस्तिदलाल दुरुस्त नहीं, इसलिए कि सही मुस्लिम में साबित है कि उन्होंने अपनी बीवी को तीन तलाकों में आखरी तलाक़ दी थी और रिफाआ नज़री का अपनी बीवी के साथ इस जैसा वाक़या साबित नहीं कि वाक़यात बहुत से माने जाएँ और इब्ने हजर ने तअद्दुदे वाक़या का फैसला नहीं किया उन्होंने

यह कहा है कि अगर रिफाआ नजरी की हदीस महफूज़ होगी तो दोनों हदीसों से वाज़ेह होता है कि वाक़या बहुत हैं वरना इब्ने हजर ने इसाबा में कहा है “लेकिन मुश्किल यह है कि दोनों वाक़या में दूसरे शौहर का नाम अब्दुर रहमान बिन जुबैर मुत्तहिद है।”

3) इमाम अहमद ने अपनी मुसनद में बतरीक इकरमा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है “रुकाना बिन अब्दे यज़ीद ने अपनी औरत को एक मजलिस में तीन तलाक़ दी, फिर उस पर बहुत गमगीन हुए। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे दरयाफ़्त फरमाया तुमने कैसी तलाक़ दी है? कहा कि तीन तलाक़ दी है, पूछा कि एक मजलिस में? उन्होंने कहा हां! तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह सिर्फ़ एक तलाक़ है अगर चाहो तो रजअत कर सकते हो, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि उन्होंने अपनी बीवी से रजअत भी कर लिया था।”

इब्ने क़य्यिम ने इलामुल मौकीन में कहा है कि इमाम अहमद इस हदीस के सनद की तसहीह व तहसीन करते थे। (हाफ़िज़ इब्ने हजर ने तलखीस में इस हदीस को ज़िक्र करके फरमाया यानी मुसनद अहमद वाली हदीस भी बहुत मजरूह व ज़ईफ़ है और हाफ़िज़ ज़हबी ने भी इसको अबू दाउद इबनुल हुसैन के मनाकिर में शुमार किया है, पस इस हालत में अगर इसकी इसनाद हसन या सही भी हो तो इस्तिदलाल नहीं हो सकता, इसलिए कि इसनाद की सेहत इस्तिदलाल की सेहत को मुस्तलजिम नहीं। (इलाम मरफ़ुआ, और यह जो मरवी ई कि रुकाना ने लफ़ज़ “बत्तह” से तलाक़ दी थी उसे अहमद, बुखारी और अबू उबैद ने जईफ़ करार दिया ई। (इमाम शाफ़ई, अबू दाउद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, इब्ने हिब्बान, हाकिम और

दारे कुतनी वगैरह ने हज़रत रुकाना से रिवायत किया है कि उन्होंने अपनी बीवी को लफ़्ज़ “बत्तह” के साथ तलाक़ दी। हाफ़िज़ इब्ने हज़र ने तलखीस/319 में लिखा है (सही अबू दाउद व इब्ने हिब्बान वलहाकिम) यानी इस हदीस को अबू दाउद, इब्ने हिब्बान और हाकिम ने सही कहा है। इब्ने माजा/149 में है कि मैंने अपने उस्ताद तनाफ़सी को यह फरमाते हुए सुना “मा अशरफ़ हाजल हदीस” यह हदीस कितनी शरीफ़ व बेहतर है। (इलाम मरफ़ुआ 11)

4) इब्ने तैमिया और इब्ने क़य्यिम वगैरह ने बयान किया है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में और खिलाफ़ते उमर के इब्तिदाई दो साल में एक लफ़्ज़ की तीन तलाक़ से एक ही समझा जाता रहा और जो फतवा सहाबा से इसके खिलाफ़ मरवी है वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के तीन तलाक़ नाफ़िज़ करने के बाद के हैं। तीन तलाक़ नाफ़िज़ करने से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह इरादा नहीं था कि उसे एक मुस्तक़िल कायदा बना डालें जो हमेशा मुस्तमर रहे, उनका इरादा तो यह था कि जब तक दवाई व असबाब मौजूद हैं तीन तलाक़ को नाफ़िज़ करार दिया जाए, जैसा कि तग़यीर हालात से बदलने वाले फतवा का हाल होता है और इमाम को इस वक़्त रिआया की ताज़ीर का हक़ भी है जिस वक़्त ऐसे मामलात में जिनके करने और छोड़ने का इनको इख़्तियार है सुए तसरूफ़ पैदा हो जाए जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सजा के तौर पर जंगे तबूक में शिर्क़ त न करने वाले तीन सहाबा को एक वक़्त तक अपनी बीवियों से जुदा रहने का हुकुम दे दिया था बावजूद कि उनकी बीवियों से कोई ग़लती नहीं हुई थी या जैसे शराब नोशी की सजा में ज्यादाती या ताजिरी की

नाजाएज़ नफा अंदोजी के वक़्त कीमतों की तायीन या जान व माल की हिफाज़त के लिए लोगों को खतरनाक रास्तों पर जाने से रोकना, बावजूद कि उन रास्तों पर हर एक को सफर करना मुबाह रहा हो।

5) पांचवीं दलील यह है कि तीन तलाक़ को लिआन की शहादतों पर क़यास किया जाए। अगर शौहर कहे मैं अल्लाह की चार शाहदतें दूँ हूँ कि मैं अपनी औरत को जिना करते हुए देखा है तो उसे एक ही शहादत समझा जाता है लिहाज़ा जब अपनी बीवी से एक मरतबा मैं कहा कि मैं तुम्हें तीन तलाक़ देता हूँ तो उसे एक ही तलाक़ समझा जाएगा और अगर इकरार का तकरार किए बेगैर कहे कि जिना का चार मरतबा इकरार करता हूँ तो उसे एक ही इकरार समझा जाता है यही हाल तलाक़ का भी है और हर वह बात जिस में क़ौल का तकरार मोतबर है, महज अदद ज़िक्र कर देना काफी न होगा, मसलन फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तसबीह व तहमीद वगैरह।

(शैख शंकीती ने इसका जवाब दिया है कि यह क़यास मअल फारिक है यानी सही नहीं है। इसलिए कि शौहर अगर लिआन की सिर्फ एक ही शहादत पर इकतिफा करले तो वह बेकार क़रार दे दी जाती है जबकि एक तलाक़ बेकार नहीं क़रार दी जाती वह भी नाफिज हो जाती है। (अजवाउल बयान जिल्द 1 पेज 195)

जमहूर का मसलक - बयक वक़्त तीन तलाक़ देने से तीन वाक़े हो जाएंगी यह जमहूर सहाबा व ताबेईन और तमाम अईम्मा मुजतहेदीन का मसलक है और इस पर उन्होंने किताब व सुन्नत और इजमा व क़यास से दलाइल कायम किए हैं। उनमें से अहम दलाइल नीचे लिखे गए हैं।

1) “ऐ नबी जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उनको उनकी इद्दत पर तलाक़ दो और इद्दत गिनते रहो और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है, उनको उनके घरों से मत निकालो और वह भी न निकले मगर जो सरीह बेहयाई करें और यह अल्लाह की बांधी हुई हर्दें हैं और जो कोई अल्लाह की हर्दों से बढ़े तो उसने अपना बुरा किया उसको खबर नहीं कि शायद अल्लाह इस तलाक़ के बाद नई सूरत पैदा कर दे।” (सूरह तलाक़ 1) इस आयत से यह मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने वह तलाक़ मशरू की है जिसके बाद इद्दत शुरू हो, ताकि तलाक़ देने वाला बाइख्तियार हो, चाहे तो उमदा तरीक़ा से बीवी को रख ले या खुबसूरती के साथ छोड़ दे। और यह इख्तियार अगरचे एक लफ़्ज़ में रजअत से पहले तीन तलाक़ जमा कर देने से नहीं हासिल हो सकता लेकिन आयत के ज़िम्न में दलील मौजूद है कि यह तलाक़ भी वाक़े हो जाएगी अगर वाक़े न होती तो वह अपने ऊपर जुल्म करने वाला न कहलाता और न उसके सामने दरवाजा बन्द होता, जैसा कि इस आयत में इशारा है। “वमैय यत्तकिल्लहि यजअल लहु मखरजन” मखरज की तफ़सीर हज़रत इब्ने अब्बास ने रजअत की है। एक साइल के जवाब में जिसने अपनी बीवी को भ्रम तलाक़ दे दी थी, आपने कहा कि अल्लाह तआला फरमाता है “और तुमने अल्लाह से खौफ नहीं किया” लिहाज़ा मैं तुम्हारे लिए कोई छुटकारे की राह नहीं पाता हूँ, तुमने अल्लाह की नाफरमानी की और तुमसे तुम्हारी बीवी जुदा हो गई। इसमें कोई इख्तेलाफ नहीं कि जो शख्स अपनी औरत को तीन तलाक़ दे दे, वह खुद पर जुल्म करने वाला है। अब अगर यह कहा जाए कि तीन तलाक़ से एक ही वाक़े होती है तो इसको अल्लाह से

डरना नहीं कहा जा सकता, जिसका हुकुम “वमैय यत्तकिल्लाहि” में दिया गया है और जिसका इल्तिजाम करने से छुटकारे का रास्ता पैदा होती और न यह जालिम की सजा बन सकती है जो हुदूदूलाह से तजावुज करने वाला है तो गोया शारे ने एक मुंकर बात कहने वाले पर इसका असर मुरत्तब नहीं किया जो उसके लिए अकूबत बनता, जैसा कि बीवी से जिहार करने वाले पर बतौर सजा कफफारा लाज़िम होता है। इससे ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह तआला ने तीनों तलाक़ नाफिज करके तलाक़ देने वाले को सजा दी है और उसके सामने रास्ता मसदूद कर दिया है, इस लिए कि इसने अल्लाह से खौफ नहीं किया, खुद पर जुल्म किया और अल्लाह की हुदूद से तजावुज किया।

2) सहीहैन में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि एक शख्स ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ दे दी, उसने दूसरे से निकाह कर लिया, दूसरे शौहर ने खलवत से पहले तलाक़ दे दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अब पहले के लिए हलाल हो गई या नहीं? फरमाया कि नहीं तावक़्तकि दूसरा शौहर पहले की तरह सोहबत से लुत्फ अंदोज न हो पहले के लिए हलाल नहीं हो सकती।

बुखारी शरीफ ने यह हदीस “बाब मन इजाजुत तलाक़” के तहत ज़िक्र की है जिससे मालूम हुआ कि उन्होंने भी इससे यकजा तीन तलाक़ ही समझा है लेकिन इस पर यह एतेराज़ किया गया है कि यह रिफाआ कुर्जी के वाक्या का मुख्तसर है, जिसकी बाज़ रिवायात में आया है कि उन्होंने तीन तलाकों में से आखरी तलाक़ दी। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने एतेराज़ को इस तरह रद्द किया है कि रिफाआ कुर्जी के

अलावा भी एक सहाबी का ऐसा वाक्या अपनी बीवी के साथ पेश आया है और दोनों ही औरतों से अब्दुर रहमान इब्ने जुबैर ने निकाह किया था और सोहबत से पहले ही तलाक़ दे दी थी, लिहाज़ा रिफाआ कुर्जी के वाक्या पर इस हदीस को महमूल करना बे दलील है। इसके बाद हाफिज़ इब्ने हजर ने कहा है “इससे उन लोगों की गलती ज़ाहिर हो गई जो दोनों वाक्या को एक कहते हैं।”

जब हदीसे आइशा का हदीस इब्ने अब्बास के साथ तकाबुल किया जाए तो दो हाल पैदा होते हैं या तो दोनों हज़रात की हदीसमें तीन तलाक़ मजमूई तौर पर मुराद है या जुदा जुदा तौर अगर तीन तलाक़ यकजाई मुराद है तो हदीसे आइशा मुत्तफ़क़ अलैह होने की वजह से ऊला है और इस हदीस में तसरीह है कि वह औरत तीन तलाक़ की वजह से हराम हो गई थी और अब दूसरे शौहर से हमबिस्तरी के बाद पहले शौहर के लिए हलाल हो सकती है और अगर मुत्तफ़रि़क़ तौर पर मुराद है तो हदीस इब्ने अब्बास में यकजाई तीन तलाकों के वाक़े न होने पर इस्तिदलाल सही नहीं है, इसलिए कि दावा तो यह है कि एक लफ़ज़ की तीन तलाक़ से एक तलाक़ पड़ती है और हदीस इब्ने अब्बास में जुदा जुदा तलाकों का ज़िक्र है और यह कहना कि हदीसे आइशा में तीन तलाक़ जुदा जुदा और हदीसे अब्बास में मजमूई तौर पर मुराद है बिला वजह हैं। इसकी दलील मौज़ूद नहीं है।

1) हज़रत इब्ने उमर की हदीस इब्ने अबी शैबा, बैहकी, दारे कुतनी ने ज़िक्र की है।

2) हज़रत आइशा की एक हदीस दारे कुतनी ने रिवायत की है।

3) हज़रत मआज बिन जबल की हदीस भी दारे कुतनी ने रिवायत की है।

4) हज़रत हसन बिन अली की हदीस भी दारे कुतनी ने रिवायत की है।

5) आमिर शाबी से फातिमा बिनते कैस के वाक्या तलाक़ की हदीस इब्ने माजा ने रिवायत की है।

6) हज़रत उबादा बिन सामित की एक हदीस दारे कुतनी व मुसन्नफ़ अब्दुर रज़ाक़ में मज़कूर है।

इन तमाम अहादीस से तीन तलाक़ का लाज़िम होना मफहूम होता है, तफसील के लिए देखें हजरतुल उस्ताज़ मुहद्दिसे जलील मौलाना हबीबुर रहमान आजमी साहब का रिसाला एलाम मरफुआ 4-7।

3) बाज़ फुकहा मसलन इब्ने कुदामा हमबली ने यह वजह बयान की है कि निकाह एक मिल्क है, जिसे जुदा तौर पर खत्म किया जा सकता है तो मजमूई तौर भी खत्म किया जा सकता है जैसा कि तमाम मिल्कियतों का यही हुकुम है। कुर्तुबी ने कहा है कि जमहूर की अकली दलील यह है कि अगर शौहर ने बीवी को तीन तलाक़ दी तो बीवी उसके लिए उस वक़्त हलाल हो सकती है जब किसी दूसरे शौहर से हमबिस्तर होले। इसमें लुगतन और शरअन पहले शौहर के तीन तलाक़ मजमूई या जुदा जुदा तौर पर देने में कोई फर्क नहीं है, फर्क महज सूतन है जिसको शारे ने लगव करार दिया है, इसलिए शारे ने इत्क, इकरार और निकाह को जमा और तफरीक की सूरत में बराबर रखा है। आका अगर बयक लफज़ कहे कि मैंने इन तीनों औरतों का निकाह तुमसे कर दिया तो निकाह हो जाता है जैसे अलग अलग यूँ कहे कि इसका और इसका निकाह तुमसे कर दिया तो

निकाह हो जाता है। इसी तरह अगर कहे कि मैंने इन तीनों गुलामों को आजाद कर दिया तो सबकी आज़ादी नाफिज हो जाएगी जैसे अलग अलग यूँ कहे कि मैंने इसको और इसको और इसको आजाद किया तो सब की आज़ादी नाफिज हो जाती है। यही हाल इकरार का भी है। इससे मालूम हुआ कि जमा तफरीक में कोई फर्क नहीं, ज़्यादा से ज़्यादा यकजाई तीन तलाक़ देने वाले को अपना इख्तियार जाये करने में इतिहा पसंदी पर मुलाज़मत का मुस्तहिक़ ठहराया जा सकता है।

4) बाज़ मुखालफीन के अलावा तमाम अहले इल्म इत्तेफाक है कि हाजिल की तलाक़ हज़रत अबू हुरैरा रजी अन्हु वगैरह की उस हदीस से वाक़े हो जाती है जिसे तमाम उम्मत ने क़बूल किया है। “तीन चीज़ें हैं जिनका वाक़ई भी हकीक़त है और मजाक भी हकीक़त है, तलाक़, निकाह और रजअत” मजाक में तलाक़ देने वाले का दिलभी इरादा के साथ तलाक़ का ज़िक्र करता है लिहाज जो तलाक़ एक से ज़ायद होगी वह मुसम्मा तलाक़ से खारिज नहीं होगी बल्कि वह भी सरीह तलाक़ होगी और तीन तलाक़ को एक समझना गोया बाज़ अदद को जेरे अमल ला कर बाकी को छोड़ देना है, लिहाज़ा यह जाएज़ न होगा।

5) यकजाई तीन तलाक़ देने से तीन वाक़े होना अक्सर अहले इल्म का क़ौल है, इसी को हज़रत उमर, उसमान, अली, इब्ने अब्बास, इब्ने उमर और इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हुम वगैरह असहाबे रसूल ने इख्तियार किया है और चारों अईम्मा इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हमबल रहमतुल्लाह अलैहिम के अलावा दूसरे फ़ुक्हा मुजतहिदीन इब्ने अबी लैला औजाई

वगैरह भी इसी के कायल हैं। इब्ने अब्दुल हादी ने इब्ने रजब से नक़ल किया है कि मेरे इल्म में किसी सहाबी और किसी ताबेई और जिन अईम्मा के अक़वाल हलाल व हराम के फतवा में मोतबर हैं उनमें से किसी से कोई ऐसी सरीह बात साबित नहीं जो बयकलफ़ज़ तीन तलाक़ के एक होने पर दलालत करे, खुद इब्ने तैमिया ने तीन तलाक़ के हुकुम में मुख़्तलिफ़ अक़वाल पेश करने के दौरान कहा- दूसरा मजहब यह है कि यह तलाक़ हराम है और लाज़िम व नाफ़िज है यही इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक और इमाम अहमद का आखरी क़ौल है, उनके अक्सर शागिर्द ने इसी क़ौल को इख़्तियार किया है और यही मजहब सलफ़े सहाबा व ताबेईन की एक बड़ी तादाद से मंकूल है।

और इब्ने क़य्यिम ने फरमाया “हमारे उलमा ने फरमाया कि या तमाम फतवा एक लफ़ज़ से तीन तलाक़ के लाज़िम होने पर मुत्तफ़िक़ हैं और यही जमूह सलफ़ का क़ौल है।” इब्ने अरबी ने अपनी किताब अल नासिख वल मंसूख़ में कहा है और इसे इब्ने क़य्यिम ने भी तहज़ीबुस सुनन में नक़ल किया है। “अल्लाह तआला फरमाता है तलाक़ दो मरतबा है” आखिर ज़माना में एक जमाअतने लगजिश खाई और कहने लगे एक लफ़ज़ की तीन तलाक़ से तीन नाफ़िज नहीं होती, उन्होंने ने इसको एक बना दिया और इस क़ौल को सलफ़े अव्वल की तरफ़ मंसूब कर दिया। अली, जुबैर, इब्ने औफ़, इब्ने मसूद और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत किया और हज्जाज बिन अरतात की तरफ़ रिवायत की निसबत कर दी, जिनका मरतबा व मक़ाम कमज़ोर और मजरूह है, इस सिलसिला में एक रिवायत की गई जिसकी कोई असलियत नहीं।” उन्होंने यहां तक

कहा है कि “लोगों ने इस सिलसिला में जो अहादीस सहाबा के तरफ मंसूब की हैं वह महज इफतिरा है, किसी किताब में इसकी असल नहीं और न किसी से इसकी रिवायत साबित है।” और आगे कहा “हज्जाज बिन अरतात की हदीस न उम्मत में मकूल है और न किसी इमाम के नज़दीक हुज्जत है।”

6) हदीस इब्ने अब्बास के जवाबात - हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की इस हदीस पर कि “अहदे नबवी, अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी के इब्तिदाई दो साल में तीन तलाक़ एक थी” कई इतेराजात वारिद होते जिनकी बिना पर इस हदीस से इस्तिदलाल कमजोर पड़ जाता है।

(क) इस हदीस के सनद व मतन में इजतिराब है, सनद में इजतिराब यह है कि कभी “अन ताऊस अन इब्ने अब्बास” कहा गया कभी “अन ताऊस अन अबीस सुहबा अन इब्ने अब्बास” और कभी अन अबील जौजा अन इब्ने अब्बास” आया है।

मतन में इजतिराब यह है कि अबुस सुहबा ने कभी इन अल्फाज़ में रिवायत किया है “किया आपको मालूम नहीं कि मर्द जब मुलाकात से पहले अपनी बीवी को तीन तलाक़ देता था तो लोग उसे एक शुमार करते थे” और कभी इन अल्फाज़ में रिवायत किया है “किया आपको मालूम नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इब्तिदाई दौरें खिलाफत में तीन तलाक़ एक थी।”

(ख) हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत करने में ताऊस अकेले हैं और ताऊस में कलाम है, इसलिए कि वह हज़रत इब्ने अब्बास से

मनाकिर रिवायत करते हैं। काजी इसमाइल ने अपनी किताब अहकामुल कुरान में कहा है कि “ताऊस अपने फजल व तकवा के बावजूद मुंकर बातें रिवायत करते हैं और उन्हीं में से यह हदीस भी है।” इब्ने अय्युब से मंकूल है कि वह ताऊस की कसरते खता पर तअज्जुब करते थे। इब्ने अब्दुल बर मालिकी ने कहा कि “ताऊस इस हदीस में अकेला हैं।” इब्ने रजब ने कहा कि “उलमा अहले क़त्त ताऊस के शाज अक़वाल का इंकार करते थे।” कुर्तुबी ने अब्दुर बर से नक़ल किया है कि “ताऊस की रिवायत वहम और ग़लत है, हिजाज, शाम और मगरिब के किसी फकीह ने उस पर इतिमाद नहीं किया है।”

(ग) बाज़ अहले इल्म ने कहा है कि हदीस दो वजह से शाज है, एक तो इस वजह से कि इसकी रिवायत करने में ताऊस अकेले हैं और कोई उनका मुताबे नहीं। इमाम अहमद ने इब्ने मंसूर की रिवायत में कहा है कि “इब्ने अब्बास के तमाम तलामिजा ने ताऊस के खिलाफ रिवायत किया है” जौज़जानी ने कहा है कि “यह हदीस शाज है” इब्ने अब्दुल हादी ने इब्ने रजब से नक़ल किया है कि “मैंने बड़ी मुश्क़ल तक इस हदीस की तहकीक़ का एहतेमाम किया, लेकिन इसकी कोई असल न पा सका।”

शाज होने की दूसरी वजह वह है कि जिसको बैहकी ने ज़िक्र किया है उन्होंने इब्ने अब्बास से तीन तलाक़ लाज़िम होने की रिवायत ज़िक्र करके इब्नुल मुंजिर से नक़ल किया है कि “वह इब्ने अब्बास के बारे में यह ज़ुम्मान नहीं करते कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उन्होंने कोई बात महफूज़ की हो और फिर उसके खिलाफ़ फतवा दें।” इब्ने तरकमानी ने कहा कि “ताऊस कहते थे कि

अबू सुहबा मौला इब्ने अब्बास ने इन तीन तलाकों के बारे में पूछा था लेकिन इब्ने अब्बास से यह रिवायत इसलिए सही नहीं मानी जा सकती कि सिकात खुद उन्हीं से इसके खिलाफ रिवायत करते हैं और अगर सही भी हो तो उनकी बात उनसे ज़्यादा जानने वाले जलीलुल कदर सहाबा हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत अली, इब्ने मसूद, इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम वगैरह पर हुज्जत नहीं हो सकती।“ हदीस में शज़ूज ही की वजह से दो जलीलुल कदर मुहद्दिसों ने इस हदीस से एराज किया है। इमाम अहमद ने असरम और इब्ने मंसूर से कहा कि मैंने इब्ने अब्बास की हदीस जानबूझ कर छोड़ दी। इसलिए कि मेरी राय में इस हदीस से यकजाई तीन तलाक़ के एक होने पर इस्तिदालाल दुरुस्त नहीं, क्योंकि हुप्फाजे हदीस ने इब्ने अब्बास से इसके खिलाफ रिवायत किया है और बैहकी ने इमाम बुखारी से नक़ल किया है कि उन्होंने हदीस को इसी वजह से जानबूझ छोड़ दिया जिसकी वजह से इमाम अहमद ने छोड़ा था और उसमें कोई शुबहा नहीं कि यह दो इमाम फन्ने हदीस को इसी वक्त छोड़ सकते हैं जब कि छोड़ने का सबब रहा हो।

(ध) हज़रत इब्ने अब्बास की हदीस एक ही इजतिमाई हालत बयान करती है जिसका इल्म तमाम मुआसरीन को होना चाहिए था और बहुत से तरीकों से उसके नक़ल के काफी असबाब होने चाहिए थे, जिसमें इख़्तेलाफ़ की गुंजाइश न होती, हालांकि इस हदीस को इब्ने अब्बास से बतरीक अहाद ही रिवायत किया गया है, इसे ताऊस के अलावा किसी ने रिवायत नहीं किया है जबकि वह मनाकिर भी रिवायत करते हैं।

जमहूर उलमाए उसूल ने कहा है कि अगर खबरे अहाद के नक़ल के असबाब ज़्यादा हों तो महज किसी एक शख्स का नक़ल करना उसके अदमे सेहत की दलील है। साहब जमउल जवामि ने खबर के अदमे सेहत के बयान में इस खबर को भी दाखिल किया है जो नक़ल के असबाब ज़्यादा होने के बावजूद बतरीक अहाद नक़ल की गई हो। इब्ने हाजिब ने मुख्तसरूल उसूल में कहा है- “जब तन्हा कोई शख्स ऐसी बात नक़ल करे, जिसके नक़ल के असबाब काफी थे, उसके नक़ल में एक बड़ी जमाअत उसके साथ शरीक होनी चाहिए थी, मसलन वह तन्हा बयान करे कि शौहर की जामे मस्जिद में मिम्ब पर खुतबा देने की हालत में खतीब को क़त्ल कर दिया गया तो वह झूठा है, उसकी बात बिल्कुल नहीं मानी जाएगी।”

जिस बात पर अहदे नबवी, अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी में तमाम मुसलमान बाकी रहे हों तो उसके नक़ल के काफी असबाब होंगे, हालांकि इब्ने अब्बास के अलावा किसी सहाबी से इसके बारे में एक हर्फ भी मूक़ नहीं (और इसको भी हज़रत इब्ने अब्बास ने अबुस सहबा के तलकीन करने पर बयान किया है) सहाबए किराम की खामोशी दो बात पर दलालत करती है। या तो हदीस इब्ने अब्बास में तीनों तलाक़ें बयक लफ़ज़ न मानी जाएँ, बल्कि उसकी सूरत यह है कि बयक लफ़ज़ तीन अल्फाज़ में तीन तलाक़ दी गई और लफ़जे तकरार ताकीद पर महमूल किया जाए या यह हदीस सही नहीं इसलिए कि नक़ल के काफी वसाइल होने के बावजूद अहाद ने इसे रिवायत किया है।

(ड) जब इब्ने अब्बास जानते थे कि अहदे नबवी, अहदे सिद्दीकी और अहदे फारूकी के इब्तिदाई दौर में तीन तलाक़ एक समझी जाती थी

तो उसके सलाह व तक़्वा, इल्म व इस्तिकामत, इत्तिबा-ए-सुन्नत और बरमला हक़गोई के पेशे नज़र यह नहीं सोचा जा सकता कि उन्होंने यकजाई तीन तलाक़ से तीन नाफिज करने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुकुम की इत्तिबा की होगी। तमत्तो हज, दो दिनार के बदला एक दिनार की खरीद व फरोख़्त, उम्मे वल्द की खरीद व फरोख़्त वगैरह के मसाइल में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से उनका इख़तेलाफ़ पोशिदा नहीं लिहाज़ा किसी ऐसे मसअला में वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुवाफ़िकत कैसे कर सकते हैं जिसके खिलाफ़ वह खुद रिवायत करते हों, तमत्तो हज के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से उनका जो इख़तेलाफ़ हुआ है इस सिलसिला में उनका यह मशूह क़ौल उनकी बरमला हक़गोई की वाज़ेह दलील है, उन्होंने फरमाया कि “क़रीब है कि तुम पर आसमान से पत्थर बरसें, मैं कहता हूँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया और तुम लोग कहते हो अबू बकर ने कहा, उमर ने कहा।”

(न) अगर इब्ने अब्बास की हदीस को सही तसलीम कर लिया जाए तो पहले ज़माने में सहाबए किराम के सलाह व तक़्वा, इल्म व इस्तिकामत और गायते इत्तिबा को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने तीन तलाकों को एक जानते हुए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का हुकुम क़बूल कर लिया होगा, उसके बावजूद किसी से बसनद सही यह साबित नहीं कि उसने हदीस इब्ने अब्बास के मुताबिक़ फतवा दिया हो।

(च) मुखालफीन का कहना है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन तलाक़ के निफाज का हुकुम सज़ा के तौर पर जारी किया था,

इसलिए कि ऐसे काम में जिस पर बड़े गौर व फिक्र के बाद इकट्ठा करना चाहिए था लोगों ने उजलत से काम लेना शुरू कर दिया था, लेकिन यह बात तसलीम करना मौजिबे इश्काल है, इसलिए कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैस मुत्तकी आलिम व फकीह कोई ऐसी सजा कैसे जारी कर सकता है जिसके असरात मुस्तहिक्के सजा तक ही महदूद रहते बल्कि दूसरी तरफ (यानी बीवी की तरफ) भी पहुंचते हैं। हराम फरज (शरमगाह) को हलाल करना और हलाल फरज (शरमगाह) को हराम करना और हूकू के रजअत वगैरह के मसाइल उस पर मुरत्तब होते हैं।

मजलिस का फैसला - मजलिसे हैय्यत किबारे उलमा ने जो फैसला किया है उसके अल्फाज़ यह हैं:

मसअला मौज़ूआ के मुकम्मल मुतालआ, तबादला खयाल और तमाम अक़वाल का जायजा लेने और उन पर वारिद होने वाले एतेराज़ पर जरह व मुनाक़शा के बाद मजलिस ने अक्सरीयत के साथ एक लफ़्ज़ की तीन तलाक़ से तीन वाक़े होने का क़ौल इख़्तियार किया। लजना दाईमा ने तीन तलाक़ के मसअला में जो बहस तैयार की है उसेक आखिर में नीचे की जैल अराकीने मजलिस के दस्तखत भी मौज़ू हैं।

- | | |
|--|------------|
| 1) अब्राहिम बिन मोहम्मद आले शौख | सदर लजना |
| 2) अब्दुर रज्जाक अफीफी | नाइब सदर |
| 3) अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहमान बिन गजयान | उज्व मजलिस |
| 4) अब्दुल्लाह बिन सुलैमान मनी | उज्व मजलिस |

तम्बीह

इस मजलिस के जिन उलमा ने तीन तलाक़ को एक करार दिया है उन्होंने सिर्फ़ इस सूत का यह हुकुम बयान किया है “जब कोई शख्स यूं तलाक़ दे कि मैंने तीन तलाक़ दी (या दिया) लेकिन जब कोई यूं कहे कि मैंने तलाक़ दिया, मैंने तलाक़ दिया, मैंने तलाक़ दिया तो इस सूरत में वह भी नहीं कहते कि एक तलाक़ पड़ेगी। (यानी इस सूरत में उनके नज़दीक भी तीन तलाक़ वाक़े होगी)

इद्दत के मसाइल

इद्दत के मानी

इद्दत के मानी शुमार करने और गिनने के हैं जबकि इस्तिलाह में इद्दत उस मुअय्यन मुद्दत को कहते हैं जिसमें शौहर की मौत या तलाक़ या खुलअ की वजह से मियां बीवी के दरमियान जुदाएगी होने पर औरत के लिए बाज़ शरई अहकामात की पाबन्दी लाज़िम हो जाती हैं औरत के फितरी अहवाल के इख्तेलाफ की वजह से इद्दतकी मुद्दत मुख्तलिफ होती है जिसका तफसीली बयान आगे रहा है।

इद्दत की शरई हैसियत

कुरान व सुन्नत की रौशनी में उम्मतु मुस्लिमा मुत्तफिक हैं कि शौहर की मौत या तलाक़ या खुलअ की वजह से मियां बीवी के दरमियान जुदाएगी होने पर औरत के लिए इद्दत वाजिब (फर्ज़) है।

इद्दत दो वजहों से वाजिब होती है

1) शौहर की मौत के वजह से

अगर शौहर के इंतिकाल के वक़्त बीवी हामला है तो बच्चा पैदा होने तक इद्दत में रहेगी, चाहे उसका वक़्त चार माह और दस दिन से कम हो या ज़्यादा। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाता है “हामला औरतों की इद्दत उनके बच्चा पैदा करने तक है।” (सूरह तलाक़ 4) इस आयत के ज़ाहिर से यही मालूम होता है कि हर हामला औरत की इद्दत यही है चाहे वह मुतल्लका हो या बेवा जैसा कि अहादीस की किताबों में वज़ाहत के साथ मौजूद है।

हमल न होने की सूरत में शौहर के इंतिकाल की वजह से इद्दत 4 महीने और 10 दिन की होगी चाहे औरत को माहवारी आती हो या नहीं, खलवते सहीहा (सोहबत) हुई हो या नहीं जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है “तुममें से जो लोग फौत हो जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो वह औरतें अपने आपको 4 महीने और 10 दिन इद्दत में रखें” (सूरह बकरह 234)

2) तलाक़ या खुलअ की वजह से

बाज़ नागुज़ीर हालात में कभी कभी इज़देवाजी ज़िन्दगी का खत्म कर देना सिर्फ़ मियां बीवी के लिए बल्कि दोनों खानदानों के ख़ि बाइसे राहत होता है, इसलिए शरीअते इस्लामिया ने तलाक़ और फस्खे निकाह (खुलअ) का क़ानून बनाया है जिसमें तलाक़ का इख्तियार सिर्फ़ मर्द को दिया गया है, क्योंकि इसमें आदतन व तबअन औरत के मुकाबले फ़िक्क व तदब्बुर और बर्दाशत की कुव्वत ज़्यादा होती है जैसा कि कुरान में ज़िक्र किया गया है। लेकिन औरत को भी इस हक़ से बिल्कुल महरूम नहीं किया गया है, बल्कि उसे भी यह हक़ दिया गया है कि वह अदालत में अपना मौक़िफ पेश करके क़ानून के मुताबिक़ तलाक़ हासिल कर सकती है जिसको खुलअ कहा जाता है। अगर तलाक़ या खुलअ के वक़्त बीवी हामला है तो बच्चा पैदा होने तक इद्दत में रहेगी चाहे तीन महीना से कम मुद्दत में ही विलादत हो जाए जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “हामला औरतों की इद्दत उनके बच्चा पैदा करने तक है।” (सूरह तलाक़ 4)

(नोट) अगर शौहर के इंतिकाल या तलाक़ के कुछ दिनों बाद हमल का इल्म हो तो इद्त बच्चा पैदा होने तक ही रहेगी चाहे यह मुद्त 9 महीने की ही क्यों न हो।

अगर तलाक़ या खुलअ के वक़्त औरत हामला नहीं है तो माहवारी आने वाली औरत के लिए इद्त 3 हैज़ (माहवारी) रहेगी। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “**مُتَّالِفَاتُ** औरतें अपने आपको तीन हैज़ तक रोके रखें।” (सूरह बकरह 228)

(नोट) तीसरी माहवारी खत्म होने के बाद इद्त पूरी होगी। औरतों के अहवाल की वजह से यह इद्त 3 महीने से ज़्यादा या 3 महीने से कम भी हो सकती है।

जिन औरतों को उम्र ज़्यादा होने की वजह से हैज़ आना बन्द हो गया हो या जिन्हें हैज़ आना शुरू ही न हुआ तो तलाक़ की सूरत में उनकी इद्त तीन महीने होगी जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान पाक में इरशाद फरमाया “**مُتَّالِفَاتُ** औरतों में से जो औरतें हैज़ से नाउम्मीद हो चुकी हैं अगर तुम उनकी इद्त की तायीन में शुबहा हो रहा है तो उनकी इद्त तीन महीना है और इसी तरह जिन औरतों को हैज़ आया ही नहीं है उनकी इद्त भी तीन महीना है।” (सूरह तलाक़ 4)

निकाह के बाद लेकिन खलवते सहीहा (सोहबत) से पहले अगर किसी औरत को तलाक़ दे दी जाए तो उस औरत के लिए कोई इद्त नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “**إِنَّمَا** ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फिर हाथ लगाने (सोहबत करने) से पहले ही तलाक़ दे दो तो उन औरतों पर

तुम्हारा कोई हक इद्दत का नहीं है जिसे तुम शुमार करो।“ (सूरह अहजाब 49) यानी खलवते सहीहा से पहले तलाक़ की सूरत में औरत के लिए कोई इद्दत नहीं है।

(नोट) निकाह के बाद लेकिन खलवते सहीहा (सोहबत) से पहले शौहर के इंतिकाल की सूरत में औरत के लिए इद्दत है। सूरह बकरह की आयत 234 के उम्म और दूसरी अहादीसे सहीहा की रौशनी में उम्मते मुस्लिमा इस पर मुत्तफिक हैं।

(नोट) निकाह के बाद लेकिन खलवते सहीहा से पहले तलाक़ देने की सूरत में आधे महर की अदाएगी करनी होगी। (सूरह बकरह 237)

इद्दत की मसलेहतें

इद्दत की बहुत सी दुनियावी व उखरवी मसलिहतें हैं जिनमें से बाज़ यह हैं:

- 1) इद्दत से अल्लाह तआला की रज़ामंदी का हुसूल होता है, क्योंकि अल्लाह तआला के हुकुम को बजालाना इबादत है और इबादत से अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है।
- 2) इद्दत को वाजिब करार देने की अहम मसलेहत इस बात का यक़ीन हासिल करना है ताकि पहले शौहर का कोई भी असर बच्चेदानी में न रहे और बच्चे के नसब में कोई शुबहा बाकी न रहे।
- 3) निकाह चूँकि अल्लाह तआला की एक अज़ीम नेमत है, इसलिए इसके ज़वाल पर इद्दत वाजिब करार दी गई।

4) निकाह के बुलंद मक़सद की मारेफ़त के लिए इद्दत वाजिब करार दी गई, ताकि इंसान इसको बच्चों का खेल न बना ले।

5) शौहर के इंतिकाल की वजह से घर/खानदान में जो एक खलापैदा हुआ है उसकी याद कुछ मुद्दत तक बाकी रखने की गरज़ से औरत के लिए इद्दत ज़रूरी करार दी गई।

चन्द दूसरे मसाइल

— हामला औरत (मुतल्लका या बेवा) की इद्दत हर सूरत में बच्चा पैदा होने तक या हमल के साक़ित होने तक रहेगी।

— शौहर की वफ़ात या तलाक़ देने के वक़्त से इद्दत शुरू हो जाती है चाहे औरत को शौहर के इंतिकाल या तलाक़ की खबर बाद में पहुंची हो।

— मुतल्लका या बेवा औरत को इद्दत के दौरान बेग़ैर किसी उज़्र के घर से बाहर निकलना नहीं चाहिए।

— किसी वजह से शौहर के घर इद्दत गुज़ारना मुश्किल हो तो औरत अपने मैके या किसी दूसरे घर में भी इद्दत गुज़ार सकती है। (सूरह तलाक़ 1)

— औरत के लिए इद्दत के दौरान दूसरी शादी करना जाएज़ नहीं है, अलबत्ता रिश्ते का पैग़ाम औरत को इशारतन दिया जा सकता है। (सूरह बकरह 234, 235)

— जिस औरत के शौहर का इंतिकाल हो जाए तो उसको इद्दत के दौरान खुशबू लगाना, सिंगार करना, सुरमा और खुशबू का तेल बेग़ैर किसी ज़रूरत के लगाना, मेंहदी लगाना और ज़्यादा चमक दमक वाले कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं है।

— अगर चांद की पहली तारीख को शौहर का इंतिकाल हुआ है तब तो यह महीने चाहे 30 के हों या 29 के हों चांद के हिसाब से पूरे किए जाएंगे और 11 तारीख को इद्दत खत्म हो जाएगी।

— अगर पहली तारीख के अलावा किसी दूसरी तारीख में शौहर का इंतिकाल हुआ है तो 130 दिन इद्दत रहेगी। उलमा की दूसरी राय यह है कि जिस तारीख में इंतिकाल हुआ है उस तारीख से चार महीने के बाद 10 दिन बढ़ा दिए जाएं मसलन 15 मुहर्रमुल हराम को इंतिकाल हुआ है तो 26 जुमादल उला को इद्दत खत्म हो जाएगी।

— अगर औरत शौहर के इंतिकाल या तलाक की सूरत में इद्दत न करे या इद्दत तो शुरू की मगर पूरी न की तो वह अल्लाह तआला के बनाए हुए कानून को तोड़ने वाली कहलाएगी जो बड़ा गुनाह है, लिहाज़ा अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिगफार करके ऐसी औरत के लिए इद्दत को पूरा करना ज़रूरी है।

— इद्दत के दौरान औरत के मुकम्मल नान व नफ़का (खाने पीने का खर्च) का जिम्मेदार शौहर ही होगा।

निकाह एक नेमत, तलाक एक ज़रूरत और इद्दत हुकमे इलाही

‘निकाह (नेमत)

निकाह अल्लाह की एक अज़ीम नेमत है, जब यह रिश्ता कायम किया जाता है तो इसमें पायेदारी व दवाम मकसूद होता है। अल्लाह तआला निकाह के मकसद को इस तरह बयान फरमाता है “और उसी की निशानियों में है कि उसने तुम्हारे ही जिन्स की बीवियाँ बनाई ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और उसने तुम्हारे (यानी मियाँ बीवी के दरमियान) मोहब्बत पैदा कर दी” (सूरह अल रूम 21)।

अल्लाह तआला ने बहुत सी हिकमतों और मसलेहतों के पेशे नज़र निकाह को जाएज़ करार दिया, मिन जुमला इन मसालेह व हिकम के एक हिकमत यह भी है कि इस रूप ज़मीन पर नौएे इंसानी, इसलाहे अरज़ और इक़ामते शराये के लिए उसकी नायब बन कर कयामत तक बाक़ी रहे और यह मसलेहतें उसी वक्त सच हो सकती हैं जबकि उनकी बुनियाद मज़बूत और मुस्तहक़म सतूनों पर हों, और वह है निकाह। वैसे तो नस्ले इंसानी का वजूद मर्द व औरत के मिलाप से मुमकिन था, ख़वाह वह मिलाप किसी भी तरह का होता, लेकिन इस मिलाप से जो नस्ल वजूद में आती वह इसलाहे अरज़ और इक़ामते शराये के लिए मौज़ू और मुनासिब न होती, न कनसल से ही वजूद में आ सकती है।

इस्लामी तालीमात का तकाज़ा है कि निकाह का मामला उम्र भर के लिए किया जाये और इसको तोड़ने और खतम करने की नौबत ही न आये क्योंकि इस मामला के टूटने का असर न सिर्फ़ मियाँ बीवी पर ही पड़ता है बल्कि औलाद की बरबादी और बाज़

खान्दानों में झगड़े का सबब बनता है। जिससे पूरा मुआशरा मुतअस्सिर होता है। इसलिए शरीअते इस्लामिया ने दोनों मियां बीवी को हिदायत दी हैं जिन पर अमल पैरा होने से यह रिश्ता ज़्यादा मज़बूत और मुस्तहकम होता है।

अगर मियां बीवी के दरमियान इख्तेलाफ रूनुमा हों तो सबसे पहले दोनों को मिल कर इख्तेलाफ दूर करने चाहिए। अगर बीवी की तरफ से कोई ऐसी सूरत पेश आये जो शौहर के मिज़ाज के खिलाफ हो तो शौहर को हुकूम दिया गया कि इफहाम व तफहीम और तम्बीह से काम ले। दूसरी तरफ शौहर से भी कहा गया कि बीवी को महज़ नौकरानी और खादमा न समझे बल्कि उसके भी कुछ हुक्क हैं जिनकी पासदारी शरीअत में ज़रूरी है। इन हुक्क में जहाँ नान व नफ़का और रिहाइश का इंतज़ाम शामिल है वहीं उसकी दिलदारी और राहत रसानी का खयाल रखना भी ज़रूरी है। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुम में सबसे अच्छा आदमी वह है जो अपने घर वालों (यानी बीवी बच्चों) की नज़र में अच्छा हो। और ज़ाहिर है कि उन की नज़र में अच्छा वही होगा जो उनके हुक्क की अदाएगी करने वाला हो।

तलाक़ (ज़रूरत)

अगर मियाँ बीवी के दरमियान इख्तेलाफ दूर न हों तो दोनों खान्दान के चन्द अफराद को हकम बना कर मामला तैय करना चाहिए। गर्जकि हर मुमकिन कोशिश की जानी चाहिए कि अज़दवाजी रिश्ता टूटने न पाये, लेकिन बाज औकात मियाँ बीवी में सुलह मुश्किल हो जाती है जिसकी वजह से दोनों का मिलकर रहना एक अज़ाब बन जाता है तो ऐसी सूरत में अज़दवाजी तअल्लुक को खत्म

करना ही तरफ़ैन के लिए मुनासिब मालूम होता है। इसी लिए शरीअते इस्लामिया ने तलाक को जायज़ करार दिया है। तलाक मियाँ बीवी के दरमियन निकाह के मुआहिदा को तोड़ने का नाम है। जिसके लिए सबसे बेहतर तरीका यह है कि दो अहम शरायत के साथ सिर्फ एक तलाक दे दी जाये।

(1) औरत पाकी की हालत में हो।

(2) शौहर औरत की ऐसी पाकी की हालत में तलाक दे रहा हो कि उसने बीवी से हमबिस्तरी न की हो। सिर्फ एक तलाक देने पर इद्दत के दौरान रजअत भी की जा सकती है, यानी मियाँ बीवी वाले तअल्लुकात किसी निकाह के बेगैर दोबारा बहाल किये जा सकते हैं। इद्दत गुजरने के बाद अगर मियाँ बीवी दोबारा निकाह करना चाहें तो निकाह भी हो सकता है। नीज़ औरत इद्दत के बाद किसी दूसरे शख्स से निकाह भी कर सकती है। गर्जकि इस तरह तलाक वाके होनेके बाद भी अज़दवाजी सिलसिला को बहाल करना मुमकिन है और औरत इद्दत के बाद दूसरे शख्स से निकाह करने का मुकम्मल इख्तियार भी रखती है।

तलाक का इख्तियार मर्द को

मर्द में आदतन व तबअन औरत की ब निसबत फिक्र व तदब्बुर और बरदाशत व तहम्मूल की कुव्वत ज़्यादा होती है, नीज़ इंसानी खिलकत, फितरत, कुव्वत और सलाहियत के लिहाज़ से और अकल के ज़रिया इंसान गौर व खौज़ करे तो यही नज़र आयेगा कि अल्लाह तआला ने जो कुव्वत मर्द को अता की है, बड़े बड़े काम करने की जो सलाहियत मर्द को अता फरमाई है वह औरत को नहीं दी गई। लिहाजा इमारत और सरबराही का काम सही तौर पर मर्द ही

अंजाम दे सकता है। इस मसअला के लिए अपनी अकल से फैसला करने के बजाये उस ज्ञात से पूछें जिसने इन दोनों को पैदा किया है। चुनांचे खालिके काएनात ने कुरान करीम में वाजेह अल्फाज़ के साथ इस मसअला का हल पेश कर दिया है। इन आयात में अल्लाह तआला ने वाजेह अल्फाज़ में जिक्र फरमा दिया कि मर्द ही जिन्दगी के सफर का सरबराह रहेगा और फैसला करने का हक मर्द ही के हासिल है अगरचे मर्द को चाहिए कि औरत को अपने फैसलों में शामिल करे। इसी वजह से शरीअते इस्लामिया ने तलाक देने का इख्तियार मर्द को दिया है।

खुला- लेकिन औरत को मजबूर नहीं बनाया कि अगर शौहर बीवी के हुक्क का पूरा हक अदा नहीं कर रहा है या बीवी किसी वजह से उसके साथ अज़दवाजी रिश्ता को जारी नहीं रखना चाहती तो औरत को शरीअते इस्लामिया ने यह इख्तियार दिया है कि वह शौहर से तलाक का मुतालबा करे। अगर औरत वाकई मज़लूमा है तो शौहर की शर्ई जिम्मेदारी है कि उसके हुक्क की अदाएंगी करे वरना औरत के मुतालबा पर उसे तलाक दे दे ख्वाह माल के बदले या बेगैर माल के। लेकिन अगर शौहर तलाक देने से इंकार कर रहा है तो बीवी को शर्ई अदालत में जाने का हक हासिल है ताकि मसअला का हल न होने पर काज़ी शौहर को तलाक देने पर मजबूर करे। इस तरह अदालत के जरिया तलाक वाके हो जायेगी और औरत इदत गुजार कर दूसरी शादी कर सकती है। खुला का शकल में तलाके बायन पड़ती है यानी अगर दोनों मियाँ बीवी दोबारा एक साथ रहना चाहें तो रजअत नहीं हो सकती बल्कि दोबारा निकाह ही करना होगा जिसके लिए तरफैन की इजाज़त जरूरी है।

तलाक की किसमें

आम तौर पर तलाक की तीन किसमें की जाती हैं।

- (1) तलाके रजई
- (2) तलाके बायन
- (3) तलाके मुगल्लजा

तलाके रजई

वाजेह अल्फाज के जरिया बीवी को एक या दो तलाक दे दी जाये। मसलन शौहर ने बीवी से कह दिया कि मैंने तुझे तलाक दी। यह वह तलाक है जिससे निकाह फौरन नहीं टूटता बल्कि इद्दत पूरी होने तक बाकी रहता है। इद्दत के दौरान मर्द जब चाहे तलाकसे रजू करके औरत को फिर से बेगैर किसी निकाह के बीवी बना सकता है। याद रहे कि शरअन रजअत के लिए बीवी की रजामंदी ज़रूरी नहीं है।

तलाके बायन

ऐसे अल्फाज के जरिया जो सराहतन तलाक के मानी पर दलालत करने वाले न हों। जैसे किसी शख्स ने अपनी बीवी से कहा कि तु अपने मैके चली जा, मैंने तुझे छोड़ दिया। इस तरह के अल्फाज से तलाक उसी वक्त वाके होगी जबकि शौहर ने इन अल्फाज के जरिया तलाक देने का इरादा किया हो वरना नहीं। इन अल्फाज के जरिया तलाके बायन पड़ती है। यानी निकाह फौरन खत्म हो जाता है, अब निकाह करके ही दोनों मियाँ बीवी एक दूसरे के लिए हलाल हो सकते हैं।

तलाके मुगल्लजा

एक साथ या अलग अलग तौर पर तीन तलाक देना तलाके मुगल्लजा (सख्त) है। ख्वाह एक ही मजलिस में हों या एक ही पकि

में दी गई हों। ऐसी सूरत में न तो मर्द को रुजू का हक हासिल है और न ही दोनों मियाँ बीवी निकाह कर सकते हैं, मगर यह कि औरत अपनी मर्जी से किसी दूसरे शख्स से बाकायदा निकाह करे ओर दोनों ने सोहबत भी की हो फिर या तो दूसरे शौहर का इंतकाल हो जाये या दूसरा शौहर अपनी मर्जी से उसे तलाक दे दे तो फिर यह औरत दूसरे शौहर की तलाक या मौत की इद्दत के बाद पहले शौहर से दोबारा निकाह कर सकती है। इसको अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में इसी तरह ब्यान फरमाया है। “फिर अगरशौहर (तीसरी) तलाक दे दे तो वह औरत उसके लिए उस वक्त तक हलाल नहीं होगी जब तक वह किसी और शौहर से निकाह न करे। हाँ! अगर (दूसरा शौहर भी) उसे तलाक दे दे तो इन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि वह एक दूसरे के पास (नया निकाह करके) दोबारा वापस आ जायें, बशर्ते कि उन्हें यह गालिब गुमान हो कि वह अब अल्लाह की हुदूद कायम रखेंगे। इसी को हलाला कहा जाता है। जिसका जिक्र कुरान करीम में है। इसके सही होने के लिए चन्द शर्तें हैं। सप्त निकाह सही तरीका से मुंअकिद हुआ हो। दूसरे शौहर ने हमबिस्तरी भी की हो। दूसरा शौहर अपनी मर्जी से तलाक दे या वफात पा जाये और दूसरी इद्दत भी गुजर गई हो। हलाला के लिए मशरूत निकाह करना हराम है।

एक साथ तीन तलाक

तलाके रजई और तलाके बायन की शकलो में आम तौर पर इखतेलाफ नहीं है। लेकिन अगर किसी शख्स ने बुरे तरीके से तलाक के सही तरीका को छोड़ कर गैर मशरू तौर पर तलाक दे दी जैसे तीन तलाकें औरत की नापाकी के दिनों में दे दीं या एक हीपाकी में

अलग अलग वक्त में तीन तलाकें दे दीं या अलग अलग तीन तलाकें ऐसे तीन पाकी के दिनों में दी जिसमें कोई सोहबत की हो, या एक ही वक्त में तीन तलाक दे दे तो ऊपर की तमाम सूरतों में तीन ही तलाके पड़ने पर पूरी उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है सिवाये एक सूरत के, कि अगर कोई शख्स एक मजलिस में तीन तलाके दे दे तो क्या एक वाके होगी या तीन? जमहूर फुकहा व उलमा की राय के मुताबिक तीन तलाक वाके होंगी। फुकहा सहाबा-ए-किराम हज़रत उमर फारूक, हज़रत उसमान, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रजी अल्लाहु अन्हुम तीन ही तलाक पड़ने के कायल थे। नीज़ चारों इमाम (इमाम अबु हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफइ और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैहिम) की मुत्तफक अलैह राय भी यही है कि एक मजलिस में तीन तलाक देने पर तीन ही वाके होगी, हिन्द, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान के उलमा की भी यही राय है। 1393 हिजरी में सउदी अरब के बड़े बड़े उलमा की अक्सरियत ने बहस व मुबाहसा के बाद कुरान व हदीस की रौशनी में सहाबा, ताबेईन और तबेताबेईन के अकवाल को सामने रख कर यही फैसला किया था कि एक वक्त में दी गई तीन तलाके तीन ही शुमार होंगी। सिर्फ उलमा की एक छोटी सी जमाअत यानी अहले हदीस (गैर मुकल्लिदीन) की राय है कि एक वाके होगी। उन हज़रात ने जिन दलाएल को बुन्याद बना कर एक मजलिस में तीन तलाक देने पर एक वाके होने का फैसला फरमया है जमहूर फुकहा व उलमा व मुहद्दिसीन ने उनको गैर मोतबर करार दिया है।

लिहाजा मालूम हुआ कि कुरान व हदीस की रौशनी में चौदह सौ (1400) साल से उम्मत मुस्लिमा की बहुत बड़ी तादाद इसी बात पर मुत्तफिक है कि एक मजलिस की तीन तलाकें तीन ही श्रार की जायेंगी, लिहाजा अगर किसी शख्स ने एक मजलिस में तीन तलाकें दे दीं तो इख्तियारे रजअत खत्म हो जायेगा नीज़ मियाँ बीवी अगर आपस में रजामंदी से भी दोबारा निकाह करना चाहें तो यह निकाह दुरुस्त और हलाल नहीं होगा यहां तक कि यह औरत तलाक की इद्त गुजारने के बाद दूसरे मर्द से निकाह करे, दूसरे शौहर के साथ रहे, दोनों एक दूसरे से सोहबत करें। फिर अगर इत्तिफाक से यह दूसरा शौहर भी तलाक दे दे या वफात पा जाये तो इसकी इद्त पूरी करने के बाद पहले शौहर से निकाह हो सकता है। यही वह जायज़ हलाला है जिसका जिक्र कुरान करीम में आया है। खलीफा सानी हज़रत उमर फारूक रजी अल्लाहु अन्हु के जमाना खिलाफत में एक मजलिस में तीन तलाकें देने पर ँह से जगहों पर बाकायेदा तौर पर तीन ही तलाक का फैसला सादिर किया जाता रहा, किसी एक सहाबी का कोई इख्तेलाफ भी किताबों में मज़ूक नहीं है। लिहाजा कुरान व हदीस की रौशनी में जम्हू फुकहा खास कर (इमाम अबु हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफइ और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैहिम) और उनके तमाम शागिर्दों की मुत्तफक अलैह राय भी यही है कि एक मजलिस में तीन तलाक देने पर तीन ही वाके होगी। मजमून की तिवालत से बचने के लिए दलाएल पर बहस नहीं की है, लेकिन मेरे दूसरे मजमून (तीन तलाक का मसइला) और सउदी अरब के उलमा के फैसला में तमाम दलाएल पर तफसीली बहस की गई है।

इद्दत तलाक या खुला की वजह से

अगर तलाक या खुला के वक्त बीवी हामला है तो बच्चा होने तक इद्दत रहेगी ख्वाह तीन माह से कम मुद्दत में ही विलादत हो जाये। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “हामला औरतों की इद्दत उनके बच्चा पैदा होने तक है (सूरह तलाक 4)। अगर शौहर के इंतिकाल या तलाक के कुद दिनों बाद हमल का इल्म हो तो इद्दत बच्चा पैदा होने तक रहेगी ख्वाह यह मुद्दत नौ महीने से कम ही क्यों न हो। अगर तलाक या खुला के वक्त औरत हामला नहीं है तो माहवारी आने वाली औरत के इद्दत तीन हैज़ रहेगी। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “मुतल्लाका औरतें अपने आपको तीन हैज़ तक रोके रखें (सूरह बकरा 228)। तीसरी माहवारी खत्म होने के बाद इद्दत पूरी होगी। औरतों के अहवाल की वजह से यह इद्दत तीन माह से ज़्यादा या तीन माह से कम भी हो सकती है।

जिन औरतों को उम्र ज़्यादा होने की वजह से हैज़ आना बन्द हो गया हो जिन्हें हैज़ आना शुरू ही न हुआ हो तो तलाक की सूरत में उनकी इद्दत तीन महीने होगी। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “तुम्हारी औरतों में से जो औरतें हैज़ से नाउम्मीद हो चुकी हैं, अगर तुम उनकी इद्दत की तार्इन में शुब्हा हो रहा है तो उनकी इद्दत तीन माह है और इसी तरह जिन औरतों को हैज़ आया ही नहीं है उनकी इद्दत भी तीन माह है (सूरह तलाक 4)।

निकाह के बाद लेकिन खलवते सहीहा (सोहबत) से पहले अगर किसी औरत को तलाक दे दी जाये तो उसके लिए कोई इद्दत नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया

“ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फिर हाथ लगाने (यानी सोहबत करने) से पहले ही तलाक दे दो तो उन औरतों पर तुम्हारा कोई हक इद्दत का नहीं है जिसे तुम शुमार करो (सूरह अहजाब 49)। यानी खलवते सहीहा से पहले तलाक की सूरत में औरत के लिए कोई इद्दत नहीं है। लेकिन खलवते सहीहा (सोहबत) से पहले शौहर के इंतिकाल की सूरत में औरत के लिए इद्दत है। सूरह बकरा की आयत 234 के आम व दूसरे अहादीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा इसपर मुत्तफिक है। निकाह के बाद लेकिन खलवते सहीहा से पहले तलाक देने की सूरत में आधे महर की अदाएगी करनी होगी। (सूरह बकरा 237)

इद्दत की मसलेहतें

इद्दत की बहुत सी दुनियावी और उखरवी मसलेहतें हैं। जिनमें से बाज़ यह हैं।

- (1) इद्दत से अल्लाह तआला की रजामंदी का हुसूल होता है क्योंकि अल्लाह तआला के हुकुम को बजालाना इबादत है और इबादत से अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है।
- (2) इद्दत को वाजिब करार देने की अहम मसलेहत इस बात का यकीन हासिल करना है ताकि पहले शौहर का कोई भी असर बच्चा दानी में न रहे और बच्चे के नसब में कोई शुब्हा बाकी न रहे।
- (3) निकाह चूंकि अल्लाह तआला की एक अजीम नेमत है इसलिए इसके जवाल पर इद्दत वाजिब करार दी गई।
- (4) निकाह के बुलन्द व बाला मक़सद की मारफ़त के लिए इद्दत वाजिब करार दी गई ताकि इंसान इसको बच्चों का खेल न बनाले।

(5) शौहर के इंतिकाल की वजह से घर, खान्दान में जो एक ख्वा पैदा हुआ है उसकी याद कुछ मुद्दत तक बाकी रखने की गर्ज से औरत के लिए इद्दत जरूरी करार दी गई।

मुतफर्रिक (जुदा जुदा) मसाइल

शौहर की वफात या तलाक देने से इद्दत शुरू हो जाती है ख्वाह औरत को शौहर के इंतिकाल या तलाक की खबर बाद में पहुंची हो। मुतल्लका या बेवा औरत को इद्दत के दौरान बिला किसी मजबूरी के घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। किसी वजह से शौहर के घर इद्दत गुजारना मुश्किल हो तो औरत अपने मैके या किसी दूसरे घर में भी इद्दत गुजार सकती है (सूरह तलाक 1)। औरत के लिए इद्दत के दौरान दूसरी शादी करना जायज़ नहीं है, अलबत्ता रिशता का पैगाम औरत को इशारतन दिया जा सकता है (सूरह बकरा 234-235)। जिस औरत के शौहर का इंतिकाल हो जाये तो उसको इद्दत के दौरान खुशबु लगाना, सिंघार करना, सुरमा और खुशबु का तेल बेगैर किसी जरूरत लगाना, मेंहदी लगाना और ज़्यादा चमक दमक वाले कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं है। अगर चांद की पहली तारीख को शौहर का इंतिकाल हुआ है तब तो यह महीने ख्वाह 30 के हों या 29 के हों चांद के हिसाब से पूरे किये जाएंगे और 11 तारीख को इद्दत खत्म हो जायेगी। अगर पहली तारीख के इलावा किसी दूसरी तारीख में शौहर का इंतिकाल हुआ है तो 130 दिन इद्दत रहेगी। उलमा की दूसरी राय यह है कि जिस तारीख में इंतिकाल हुआ है उस तारीख से चार माह के बाद 10 दिन बढ़ा दिए जायें मसलन 15 मुहर्रम को इंतिकाल हुआ है तो 26 जमादिल अव्वल को इद्दत खत्म हो जायेगी। अगर औरत शौहर के इंतिकाल या तलाक की

सूरत में इद्दत न करे या इद्दत तो शुरू की मगर पूरी न की तो वह अल्लाह तआला के बनाये हुए कानून को तोड़ने वाली कहलाएगी जो बड़ा गुनाह है, लिहाजा अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिगफार करके ऐसी औरत के लिए इद्दत को पूरा करना जरूरी है। इद्दत के दौरान औरत के पूरे नान व नफका का जिम्मेदार शौहर ही होगा।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाई।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को “अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी” यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअकिद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौजूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूब तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

najeebqasmi@gmail.com

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دواہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرت النبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، سफलता کے لیے آؤ
رمضان - اللہ کا ایک उपहार
ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
مختصر حج مبرور
حج مبرور کا طریقہ
پارिवارिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में
لوگوں کے अधिकار اور انکے معاملات
مہترपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR